प्रेम-तरंग
सरस्वती देवी शर्मा

श्री साधुबेला उदासीन आश्रम बम्बई द्वारा स्वीकृत-उद्देश्य और नियम

उद्देश्य—

१ भारतीय संस्कृतिका संरक्षण करना, २ श्रौत-स्मार्त सनातन-धर्म का प्रचार करना, ३ भारतीय जनता के धार्मिक, नैतिक और सामाजिक जीवन को अध्यात्म की ओर प्रवृत्त करना, ४ "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सिद्धान्त को कार्यरूप में परिणत करना, ५ मानव मात्र की निष्काम सेवा और उस सेवाव्रत में दीक्षित साधुसमाज की सेवा करना, ६ पुस्तकालयों की स्थापना—द्वारा भारतीय साहित्य का संरक्षण और संवर्द्धन, ७ उदासीन मण्डल को आदर्श संघटन में सम्बन्ध करके भारतीय जनता के सामाजिक, नैतिक और धार्मिक सुधारों द्वारा अपने देश में प्रगति लाना।

नियम—

१ मादक वस्तु सेवन करने वाला, पैसा मांगने वाला, व्यर्थ भ्रमण करने वाला, जूआ, अमेरिकन फीचर, नम्बर, आदि किसी प्रकार का नम्बर बताने या लगाने वाला आश्रम में निवास नहीं कर सकेगा।

२ परमाध्यक्ष के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति सेवक या शिष्य नहीं बना सकेगा।

३ ज्योतिष का व्यवसाय करने वाले, औषध बेचने वाले या साम्प्रदायिक वाद-विवाद करने वाले लोग आश्रम में निवास नहीं कर सकेंगे।

आरती, कथा और भोजन में
।

रम कर्तव्य होगा कि अपने प्रकोष्ठ
किसी भी प्रकारकी क्षति न पहुं-
रखे।

र में या अन्यत्र भोजन पाने न जाय।
र प्रवृत्तियों से सम्बन्ध गृहस्थों के अति-
आश्रम में रहने की व्यवस्था नहीं होगी।
बजे से पूर्व ही आश्रम में उपस्थित

े को आश्रम की सीमा में रहने

क व्यक्ति को प्रबन्धक के आदेशों का

विषयों के लिए आश्रम के मंच
। परमाध्यक्ष

ार्य स्वामी गणेशदास उदासीन

जा घट प्रेम-तरंग नहीं, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, सांस लेत बिन प्रान।।

: संकलन-कर्त्री :
सरस्वती देवी शर्मा
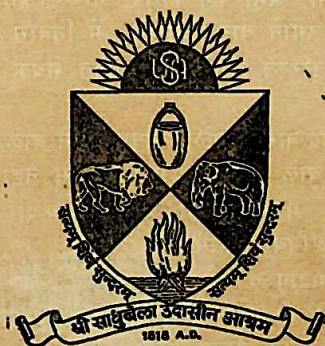
: प्रकाशक :
कोठारी हरिभजनदास
श्री साधुबेला उदासीन आश्रम
महालक्ष्मी, बम्बई २६

प्रथमावृत्ति
१००० (partially visible)

फोन
७५७३८, ७७१०४

मूल्य
७५ न.पै.

श्री साधुबेला उदासीन आश्रम बम्बई की—

उत्सव-तालिका

१ – चैत्र नवरात्र
२ – दुर्गा-अष्टमी
३ – रामनवमी
४ – वैशाखी
५ – अक्षयतृतीया
६ – निर्जल एकादशी
७ – श्री बनखण्डि-वार्षिकोत्सव
८ – गुरु-पूर्णिमा
९ – रक्षा-बन्धन
१० – श्री कृष्ण-जन्माष्टमी
११ – जगद्गुरु श्री श्रीचन्द्राचार्य जयंति
१२ – दुर्गा-अष्टमी
१३ – विजया दशमी
१४ – दीपावली
१५ – अन्नकूट
१६ – गोप-अष्टमी
१७ – हरिप्रबोधिनी एकादशी
१८ – गीता-जयंति
१९ – श्री स्वामी हरिनामदास जयंति
२० – मकर संक्रान्ति
२१ – वसन्त-पंचमी
२२ – शिवरात्रि
२३ – होलिका दहन

श्री साधुबेला उदासीन आश्रम, बम्बई का

मन्दिर-समय

प्रातः ६ से १२ तक — सायं: ३ से ९ तक

१ से ३ विश्राम

शंखध्वनि	६– ०	दर्शन	३– ०
दर्शन	६–४५	कीर्तन, कथा	५ से ७
श्रृङ्गार आरती	७–१५	सन्ध्या-आरती	७–१५ से ८–३०
राज-भोग	११–३०	शयन-दर्शन	८–३०
विश्राम	१२– ०	विश्राम	९– ०
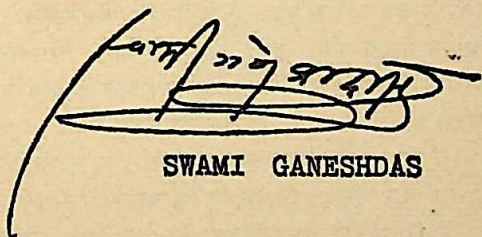
आज का पथ

~~~~~~~~

१ जिस के आदेश का सम्मान नहीं उसके पाँव धोकर पीने से क्या लाभ ?

२ अपनी भूल का कटु परिणाम अपने को तत्काल दृष्टिगत नहीं होता।

३ गुरुजनों के आदेश को ठुकराने वाला ऐहिक तथा पारलौकिक सुखों से बंचित रहता है।

४ जिस में श्रद्धा और विश्वास नहीं उस की पूजा व्यर्थ है।

SWAMI GANESHDAS

—आचार्य स्वामी गणेशदास

२३—३—६०
~~~~~~~~

आलोक

श्री साधुवेला उदासीन आश्रम में दर्शनार्थियों से बहिन सरस्वती शर्मा अपरिचित नहीं। वे आश्रम की अत्यन्त श्रद्धालु सेविका हैं। यह भजनों का अत्युत्तम संग्रह उन्हीं के प्रयास का मधुर फल है।

इस असार संसार में आकर प्राणी अज्ञान-वश ईश्वरीय सत्ता को भूल बैठा है। स्पर्धा से कलुषित बुद्धि मानव सहयोग से विपरीत वियोग की भावना से पारस्परिक विनाशकर और हानिकारक कार्यों में प्रवृत्त होता हैं। अपने अमूल्य जीवन को भूलकर मानव अपने–आपसे बहुत दूर होता जा रहा है, ऐसी अवस्था में ईश्वरीय द्वार (देवालय) ही एक पवित्र स्थान है जहाँ पर मानसिक शांति प्राप्त की जा सकती है। श्री साधुवेला उदासीन आश्रम जैसे पवित्र स्थान में आते ही मानव अपने आपको ईश्वरीय सान्निध्य में पाता है।

आप और हम जब मिलकर मधुरता से भरपूर इस पुस्तक की अमृत रूपी दैवी-वाणी का पान करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानों भगवान स्वयं हम लोगों के साथ विराजमान हैं। यहाँ के पवित्र वायुमण्डल में प्रवेश करते ही चंचल मानवीय मन शान्ति प्राप्त करता है। केवल एक पद, वाक्य, कथा अथवा वर्ण के श्रवण मात्र से ही जीवन का साफल्य सम्भव है। अतः यदि "प्रेम-तरंग" का एक भी शब्द मानव-जीवन की नाव को ईश्वर के चरणों में ले जाये और आपको इन सांसारिक प्रपंचो से विमुक्त कर दे तो मेरे विचार से इस पुस्तक का उद्देश्य सफल सिद्ध होगा।

सरस्वती बहिन की भजनों की दो पुस्तकें पहिले ही प्रकाशित हो चुकी हैं–प्रथम "प्रेम-पुष्प" और द्वितीय "प्रेम-पीयूष"। दोनों पुस्तकें जनता ने अत्यन्त पसन्द कीं। अभी आपके सामने "प्रेम-तरंग" जिसमें नये भजन, शिक्षाप्रद-उद्धरण और जीवन में सफलता के मार्ग का दर्शन कराया गया है, प्रस्तुत की जा रही है। पुस्तक का मूल्य केवल ०–७५ पचहत्तर न. पै. रखा गया है जिससे सभी सज्जनवृंद इससे लाभ उठा सकें। श्री साधुवेला उदासीन आश्रम और उसके पूज्य महन्त आचार्य श्री स्वामी गणेशदास जी महाराज की उदारता और त्यागशीलता से ऐसे कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। आशा है भविष्य में विविध भाषाओं में विभिन्न पुस्तकें प्रकाशित करके आप लोगों के सामने उपस्थित की जायेंगी।

सेवा में—

८-७-१९६०

लाल सी॰ मंघरमलानी

परम गुरुदेव श्री १०८ स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

[कवलदास कुटिया हरिद्वार]

की

पवित्र स्मृति में

गुरुदेव श्री स्वामी आत्मानन्द जी

शिष्य गागनदास दयाराम सानी

पवित्र तीर्थ : श्री साधुबेला

काश्मीर के उत्तर पूर्व में विशाल हिमधवल गौर कैलाश पर्वत है, जो वहाँ की भाषा में गांगरी कहलाता है। इसी रजताद्रि कैलाश के पश्चिमी पार्श्व से जो हिमधारा पश्चिम की ओर बह निकलती है उसीका नाम सिंधु है। इस सिंधु नदी का केवल यही महत्त्व नहीं है कि इसका
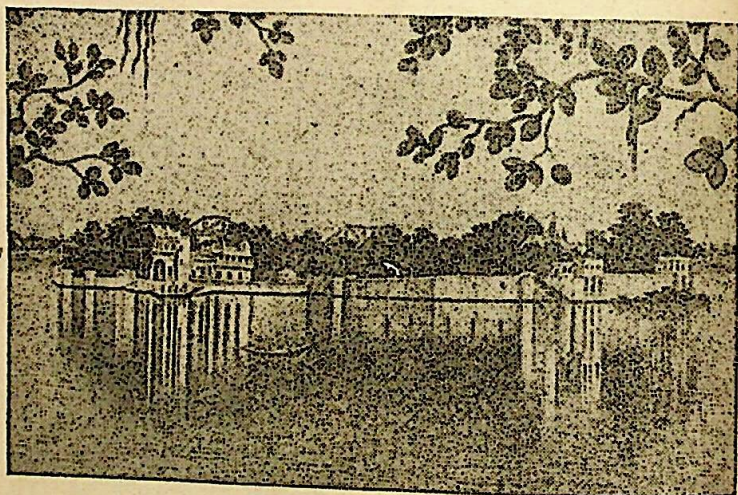
जन्म पुण्य-गिरी कैलाश से हुआ है और न यही कि इसने पंचनद तथा सिंधु की भूमि को मरुस्थल होने से बचा लिया, बल्कि इसका सबसे बड़ा महत्त्व यह ह कि इसी नद ने अपने नामों से समस्त विश्व को भारत का परिचय दिया। यही कारण रहा कि पूर्व और पश्चिम के सभी देशों ने इस सिंधु-स्थान को अपनी विकृत भाषा में हिन्दुस्तान कहा। केवल देशको ही नहीं, यहाँ के निवासियों को भी इन विदेशियों ने इसी नदी के नाम पर सिन्धु या हिंदू कह कर संबोधित किया।

श्री साधुबेला तीर्थ की स्थापना

पंजाब के मध्य से लेकर सागर-संगम तक सिन्धु नद में अनेक छोटे-छोटे द्वीप बीच-बीच में उठ खड़े हुए हैं, जो जल बढ़ जाने पर मेनाक पर्वत
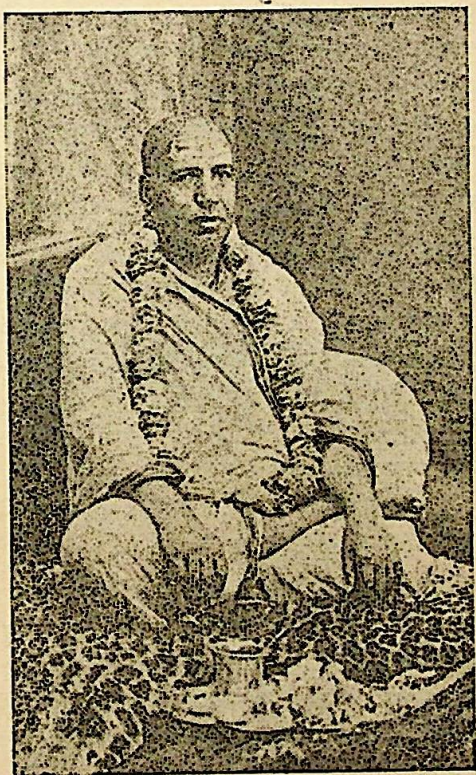
पद—वाक्य—प्रमाण पारावारीण

श्री १०८ स्वामी हरिनामदास जी उदासीन

की भाँति जल धारा में लुप्त हो जाते हैं, कुछ ऐसी ठोस पथरीली ऊँची पहाड़ियाँ भी हैं, जो बाढ़ के दिनों में भी सदा जल-तल से ऊँची उठी रहती हैं।

इन्हीं पहाड़ियों में से एक वह पहाड़ी भी है जो सक्खर और रोहड़ी नगरों के बीच बहते हुए सिन्धु नदी की धारा के बीचों बीच न जाने किस युग से खड़ी है और जिसकी दोनों टेकरियों के बीच की घाटी में बाढ़ के दिनों में भी जल ऊपर चढ़ आता था इसी द्वीप पर संवत १८८० वि. में श्री योगीराज स्वामी बनखण्डी जी ने हिन्दू जाति तथा सनातन धर्म के उद्वार एवं संरक्षण के निमित्त श्री साधुवेला तीर्थ की स्थापना की।

श्री स्वामी बनखण्डी जी ने विश्व की परम पोषिका शक्तिमाता अन्नपूर्णा की उपासना प्रारम्भ कर दी। उन्होंने इस शक्ति को सिद्ध करने के लिए जो अनुष्ठान प्रारम्भ किया वह भी इतना असाधारण था कि नौ दिन पूर्ण होते ही सर्व शक्तिमति माता अन्नपूर्णा का उन्हें साक्षात्कार हुआ।

इनकी वरेण्य शिष्य परम्परा में पद-वाक्य प्रमाण पारावारीण श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी उदासीन ने अपनी अगणित लोक सेवाओं से बड़ा यश अर्जित किया। उनके हृदय में लोक सेवा की भावना इतनी उद्दीप्त थी कि जिस समय भूकम्प ने क्वेटा नगर को ध्वस्त किया और वहाँ के तीन चौथाई नगरवासी अपने-अपने भवनों में दब कर समाप्त हो गये, उस समय निराश्रित, निरीह प्राणियों को श्री साधुवेला तीर्थ की ओर से जो अभूतपूर्व सेवा पहुँचाई गई वह सर्वथा प्रशंसनीय और स्मरणीय है। इसी प्रकार जब नोआखाली में हिन्दू परिवार त्रस्त हुए उस समय भी श्री साधुवेला तीर्थ की ओर से अन्न–वस्त्र तथा धन की सहायता पहुँचाई गई।

श्री साधुवेला तीर्थ सिन्ध प्रान्त के अन्दर हिन्दी तथा संस्कृत प्रचार का प्रमुख केन्द्र था। तीर्थ में "श्री गुरु श्रीचन्द्र उदासीन उपदेशक सभा", निःशुल्क वाचनालय तथा विद्यालय खुले और उनकी उन्हीं लोक सेवाओं का अभिनन्दन करने के लिये विश्ववन्द्य महात्मा गांधी, महामना मालवीयजी, पं. जवाहरलाल नेहरू तथा देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसादजी जैसे लोकनेता भी उस आश्रम का निरीक्षण करने गए।

लोक कल्याण की प्रवृत्तियां

श्री साधुवेला तीर्थ में वेद भवन, गीता भवन, सद्गुरु बनखण्डीजी का मन्दिर, अतिथि शालाएँ, साधुओं के वास–स्थान, पंगत–स्थल, सभा–मंडप थे। श्री साधुवेला तीर्थ का अपना विद्युत्-गृह था जिससे समस्त तीर्थ को प्रकाश

मिलता था। तीर्थ में एक सुन्दर उद्यान था जिसमें नाना प्रकार के वृक्ष तथा पुष्प प्रत्येक ऋतु में आगत यात्रियों को सुख पहुँचाते थे। सिन्ध का प्रत्येक हिन्दू अपने धार्मिक कृत्य (मुण्डन, यज्ञोपवीत तथा प्रायश्चित्त आदि) इसी तीर्थ में करता था। सारे सिन्ध के हिन्दुओं का यह एक धार्मिक तथा ऐतिहासिक केन्द्र था।

जनता की श्रद्धा

तीर्थ की ओर से प्रत्येक कुम्भ के अवसर पर "श्री साधुवेला तीर्थ सिन्धी छावनी" का निर्माण होता था जहाँ गृहस्थों तथा साधुओं के लिए अलग अलग वास-स्थान बने रहते थे, वहाँ भजन, कीर्तन, प्रवचन, धर्म-प्रचार आदि के निरन्तर समारोह के कारण भव्य मेला लगा रहता था। वहाँ अन्न क्षेत्रों द्वारा प्रत्येक समागत व्यक्ति का स्वागत-सत्कार होता था और पंगत में सहस्रों व्यक्ति नित्य प्रसाद पाते थे। श्री साधुवेला तीर्थ में भी नित्य प्रति सहस्रों व्यक्तियों
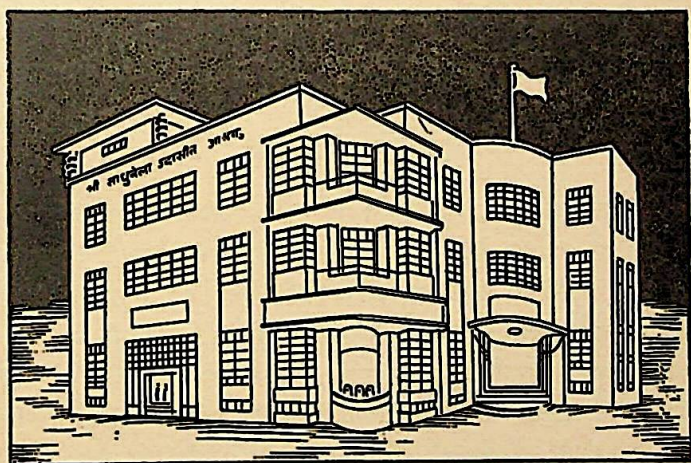
श्री साधुबेला उदासीन आश्रम, बम्बई

को बिना किसी भेदभाव के भोजन कराया जाता था। वहाँ पर भोजन के समय जो भी उपस्थित होता था उसे अवश्य भोजन मिलता था। तीर्थ का मुख्य प्रसाद रोट चटनी था, जिस को जनता प्रेम तथा श्रद्धा के साथ ग्रहण करती थी।

श्री साधुबेला उदासीन आश्रम, बम्बई

संवत वि० १८७५ (सन् १८१८) में श्री योगिराज स्वामी वनखण्डजी महाराजने बम्बई में धूनी जमाई। कुछ दिनों के बाद वे अपने गुरुभाई श्री गुरूमुखदास जी को स्थान में छोड़ कर सिन्ध की ओर चल दिए।

बम्बई का यह आश्रम बड़ी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। अतः यह आवश्यक हो गया कि इस आश्रम का जीर्णोद्वार और संस्कार करा दिया जाय। इसी पवित्र भावना से प्रेरित होकर और आश्रम की परम्परागत लोकसेवाओं को जीवित करने के लिए इस आश्रम को फरवरी १९५७ में वर्त्तमान युग की सम्पूर्ण सुविधा और साधनों से सम्पन्न करके ऐसा स्वच्छ और सुसंस्कृत केन्द्र बना दिया गया है कि उससे विद्वान, गुणी और साधु महापुरुष भी लाभ उठाएँ तथा साधारण जनता को भी उस से लाभ हो सके। इसी लिए जहाँ एक ओर विद्वानों के लिए पुस्तकालय और वाचनालय की व्यवस्था है, वहीं साधारण जनता के हित के लिये पानीय-शालिका, कथामण्डप, चिकित्सालय आदि की व्यवस्था की गई है।

देश का विभाजन

श्री साधुवेला तीर्थ दैवयोग से सन् १९४७ में देश विभाजन हो जाने के पश्चात् सिन्धु गंगा के क्रोड़ से उठकर यह तीर्थ भागीरथी गंगा तट पर काशी में आवसा है किन्तु इस के दैनिक कार्य में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आया। अब भी नित्य कथा, कीर्त्तन और प्रवचन यथापूर्व होता रहता है, और अनेक सद्ग्रंथों का प्रकाशन किया जा रहा है और उस की ओर से "वासन्ती" नाम की सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा पारिवारिक मासिक पत्रिका प्रकाशित की जा रही है; आश्रम की इस बम्बई शाखा के अतिरिक्त उत्तर काशी में भी शाखा है जहाँ नित्य नियमित रूप से कथा, कीर्तन प्रवचन और उत्सव मनाए जाते हैं।

आचार्य स्वामी गणेशदास उदासीन

महन्त श्री साधुबेला

समर्पण :—

मेरे परमाराध्य गुरुदेव !

प्रभो !

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागे है मोर॥

दासी :—
सरस्वती देवी शर्मा

आ मु ख

आज का युग भौतिकवादी है। इस लिए कि—वह भौतिकता में सुख—शान्ति और परमानन्द की खोज में व्यस्त है। जहाँ आज के भौतिकवादी मानव ने जड़ को संचारित करने का प्रयास किया है—दूसरे शव्दो में जड़ में चेतनता का स्थूल दर्शन किया है वहीं वह समष्टि चेतना से दूर होता गया है, होता जा रहा है; तव उसके सामने ईश्वर और उसकी प्राप्ति के साधन ज्ञान, भक्ति और विराग आदि की वातें उपहास की सी ही होंगी। उनका यह उपहास मेरे अपने शव्दों में एक प्रकार का अज्ञान ही है और जिस के निवारण के पश्चात् ही उन्हें 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का साक्षात्कार होकर शाश्वत् शान्ति प्राप्त हो सकती है।

हमारे समस्त शास्त्रों का लक्ष्य, समस्त साधनाओं का रहस्य, सारी उपासनाओं का मर्म जीव की परम चरम शान्ति में ही निहित है। जिसे भौतिक वादी जड़ वस्तुओं के संग्रह में ढूँढ़ रहा है, हमारे महर्षियों ने उसे त्याग में पाया था। त्याग की पृष्ठ-भूमि में विराग का स्थान है। विराग सांसारिक वासनाओं की निवृत्ति का पर्याय है। यह निवृत्ति साधार है, निराधार नहीं। सत्य के प्रति राग होने पर असत् की निवृत्ति है। सत्य है केवल भगवान्।

तव प्रश्न होता है कि सत्य रूप भगवान् से राग का उदय कैसे हो? इसी के उत्तर में समस्त ईश्वर आराधानाओं के प्रकार, भजन की शैलियों—प्रणालियों का उद्भव है। इन प्रणालियों में से प्रत्येक का अथवा किसी एक विशेष का ज्ञान प्राप्त कर के उसका आचारण करने के लिये सत्सङ्ग की अत्यन्त आवश्यकता है। सत्संग का सीधा अर्थ है—"सत्य स्वरूप भगवान् के प्रति आसक्ति"। यह भगवदासक्ति हमारी समस्त अन्यान्य आसक्तियों का उच्छेद करके हमें परम सुख परम शान्ति प्रदान करती है।

भक्त उद्धव के पूछने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने समस्त साधनाओं का रहस्य 'सत्संग' ही बताया था।—

न रोधयति मां योगो न साङ्ख्यं धर्म एव च।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्त्तं न दक्षिणा॥
व्रतानि यज्ञश्छन्दांसि तीर्थानि नियमा यमाः।
यथावरुन्धे सत्सङ्ग सर्वसङ्गापहो हि माम्॥

—श्री मद्भागवत्, ११, १२, १-२

"प्रिय उद्धव ! जगत् में जितनी आसक्तियाँ हैं इन्हें—सत्सङ्ग नष्ट कर देता है यही कारण है कि सत्सङ्ग जिस प्रकार मुझे वश में कर लेता है वैसा साधन न योग है, न सांख्य, न धर्मपालन, न स्वाध्याय, तपस्या, त्याग, इष्टापूर्त और दक्षिणा से भी मैं वैसा प्रसन्न नहीं होता। कहाँ तक कहूँ व्रत, यज्ञ, वेद, तीर्थ और यम नियम भी मुझे वश करने में सत्सङ्ग के समक्ष असमर्थ से ही हैं।

इस सत्संग के प्रसाद से दैत्य, राक्षस, पशु-पक्षी, गन्धर्व—अप्सरा, नाग-सिद्ध-चारण, गुह्यक, वैश्य, शूद्र, स्त्री, अन्त्यज और रजोगुणी-तमोगुणी प्रकृति वालों ने भी परमपद प्राप्त कर लिया है। वृत्रासुर, प्रल्हाद, बालि, बाणासुर, विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, गजेन्द्र, जटायु, तुलाधार वैश्य, कुब्जा, व्रज-गोपियाँ, यज्ञ-पत्नियाँ और बहुत से दूसरे लोग भी सत्संग के प्रभाव से मुझे प्राप्त कर सकें हैं।

इस सत्संग के पीछे छिपी हुई मेरे जीवन की एक विशद कहानी है जिसका विज्ञापन अनावश्यक है किन्तु मैं अपने अनुभव और विश्वास के आधार पर इतना कहने का साहस करती हूँ कि सत्संग जैसा लाभ न तो लोक में अन्य कुछ है और न परलोक में ही होगा। तभी तो कबीर ने कहा था :—

राम बुलावा भेजिया दिया कबीरा रोइ।
जो सुख साधूसंग में सो वैकुंठ न होइ॥

मुझे बाल्यकाल से ही धर्म और ईश्वर से सहज रुचि थी। मैं कैसे और किस क्रम से सत्संग के आनन्द निधि में आ गिरी न कहना ही श्रेयस्कर है। सत्संग

ने मुझे शान्ति दी, आनन्द दिया, उसने मेरी वासनाओं को जड़ से उखाड़ न फेंका तो जर्जरित अवश्य कर दिया। सत्संग ने मुझे विश्वास दिया। मंगलमय श्रीकृष्ण के चरणों में मेरे अधिकार के अनुसार यत्किंचित् अनुराग दिया। इसी साधुसंग का पावन प्रताप है जिस के पश्चात् मेरी समस्त इच्छाएँ मानो पूर्ण हो गयी। मैं सब ओर से वासनारहित होकर एक ही मधुर वासना लिये फिरती हूँ।

निरन्तर अपने प्राणेश श्रीकृष्ण के सुमधुर परमानन्दमय, मंगलमय लीला-गुण, चरित्र और नामों का रसमय गान करती रहूँ, कभी थकूँ नहीं, अघाऊँ नहीं, अतृप्त और अधिकाधिक अतृप्त बनी रहूँ, बनती रहूँ।

मैं कवियित्री नहीं हूँ, गायिका नहीं और न विदुषी हूँ। मैं श्रीकृष्ण के प्रेम की भिखारिणी हूँ। मैंने अपने पागलपन में जो रोदन प्रलाप और बकवास किया है उसे ही मेरे पूज्य एवं आदरणीय गुरुजनों ने संकलन का रूप दे दिया है। मेरे पाठक भाई बहिनों ने प्रथम उसे 'प्रेमपुष्प' और "प्रेमपीयूष" के रूप में अपनाया था, अब आपके करकमलों में यह तीसरा प्रलाप 'प्रेम तरङ्ग, के नाम से समर्पित है।

अन्त में प्रेमी पाठक और पाठिकाओं से प्रार्थना है कि 'प्रेमतरङ्ग' के प्रेम-पाठ से लाभ उठावें तथा इस की लेखन प्रकाशन सम्बंधी प्रत्येक त्रुटि के लिये मुझे क्षमा करते हुए अपनी कृपा दष्टि से अनुगृहीत करें।

गुरुपूर्णिमा
८ जुलाई १९६०

सरस्वतीदेवी शर्मा

प्रेम—तरंग

सादर शीश नवाता हूँ

मैं सादर शीश नवाता हूँ, गोपाल तुम्हारे चरणों में।
कुछ अपनी विनय सुनाता हूँ, गोपाल तुम्हारे चरणों में॥
घर में वा वन में देह रहे, मन पद पंकज में नेह रहे।
बढ़ता अनुदिन नवनेह रहे, गोपाल तुम्हारे चरणों में॥ १॥
जिस जिस योनि में भ्रमण करूँ, जो जो शरीर मैं ग्रहण करूँ।
वहाँ कमल भृंग हो रमण करूँ, गोपाल तुम्हारे चरणों में॥ २॥
तेरे ही गुणों का हो कीर्तन, भूलूँ न कभी निशदिन पल छिन।
तन-मन-धन मेरा हो अर्पण, गोपाल तुम्हारे चरणों में॥ ३॥
सुख सम्पत्ति की कुछ चाह नहीं, परिवार मिटे परवाह नहीं।
हो जाय मेरा निर्वाह यहीं, गोपाल तुम्हारे चरणों में॥ ४॥

परम पद

भजो रे भाई राम राम श्री राम

अशरण शरण अघहरण चरण में, मिले शान्ति विश्राम॥
चिन्तन ध्यान जाप का करना, गाना हरि गुनग्राम।
सुरति शब्द संयोग रूप यह, सहज योग है नाम॥ १॥
राम राम मय नाद मधुरतम, जब हो बिना विराम।
तब समझो कर निश्चय पूर्ण, सुधर गए सब काम॥ २॥
राम शब्द जब चले निरन्तर, भीतर आठों याम।
सत्य समझिए फले मनोरथ, मिले परम पद धाम॥ ३॥

रूठ गए क्यों ?

मुझ से रूठ गए क्यों मोहन॥

कैसे प्रभुजी तुम्हें मनाऊं, पास मेरे क्या जो ले आऊं॥
प्रेम के अश्रु तुम को चढ़ाऊं, तब तो मुझ से बोलोगे मोहन॥ १॥

दीन दयालु नाम है तेरा, तुम स्वामी हो मैं हूं चेरा।
मन–मन्दिर में कर दो डेरा, दर्शन दे दो आकर मोहन॥ २॥

देकर अपनी याद भुलाया, सब कुछ मैंने आप लुटाया।
अब आशा का दीप जलाओ, तब होगा उजियारा मोहन॥ ३॥

बातों बातों में भर माया, पल में अपना मुझे बनाया।
चरण कमल का दास बना कर, "राघव" को अपनाओ मोहन॥ ४॥

देख प्रभु की माया

देख प्रभु की माया रे बन्दे देख प्रभु की माया॥
जिसने ये संसार बनाया, रंग रूप से उसे सजाया।

किसी ने भेद नहीं पाया, ऐसा खेल रचाया रे बन्दे॥
देख प्रभु की माया॥१॥

क्षण में कुछ का कुछ कर डाले, जीव मात्र सब को प्रति पाले।
किसी को मार किसी को जिलावे, अन्त न उसका पाया रे बन्दे॥
देख प्रभु की माया॥ २॥

"जल चर, थल चर, नभ चर नाना, जो जड़ चेतन जीव जहाना"
एक ज्योति सब में है समाना, जुदा जुदा है काया रे बन्दे।
देख प्रभु की माया॥ ३॥

जो माया-पति को वश करना "राघव" उसका नाम सुमरना।
तन-मन-धन चरणों में धरना, कभी न व्यापे माया रे बन्दे।
देख प्रभु की माया॥४॥

कमल-नेत्र स्तोत्र

श्री कमल नेत्र कटि पिताम्बर। अधर मुरली गिरि-धरम्।
मुकुट कुण्डल कर-लकुटिया। सांवरे राधे वरम्॥ १॥

कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपी मन हरम्।
पीत वस्त्र गरुड वाहन, चरण नित सुख सागरम्॥ २॥

करत केलि कलोल निशिदिन, कुँज भवन उजागरम्।
अजर अमर अडोल निशिदिन, पुरुषोत्तम अपरा परम्॥ ३॥

दीनानाथ दयालु गिरिधर, कंस हिरणाकुशहरम्।
गल फूल माल विशाल लोचन, अधिक सुन्दर केशवम्॥ ४॥

बंशीधर वसुदेव छैय्या, वल छल्यो हरि वामनम्।
जल डूबते गज राख लीन्हों, लंका छीनी रावणम्॥ ५॥

सप्तद्वीप नौ खण्ड चौदह, भुवन कीने इक पदम्।
द्रौपदी की लाज राखी, कहाँ लौं उपमा करम्॥ ६॥

दीनानाथ दयालु पूर्ण, करुणामय करुणा करम्।
कवि "दत्तदास" विशाल निसदिन, नाम जप नित नागरम्॥ ७॥

प्रथम गुरु जी के चरण वन्दौ, जहाँ से ज्ञान प्रकाशितम्।
आदि विष्णु जुगादि व्रह्मा, सेवते शिव शंकरम्॥ ८॥

श्री कृष्ण केशव कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम्।
श्री राम रघुपति राम रघुपति, राम रघुपति राघवम्॥ ९॥

श्री रामकृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्री वामनम्।
मच्छ, कच्छ, वराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनम्॥ १०॥

मथुरा में केशवराय बिराजे, गोकुल बालमुकुन्द जी।
श्री वृन्दाबन में मदन मोहन, गोपीनाथ गोविन्दजी॥ ११॥

धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहाँ श्रीपति अवतरे।
धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखा वरम्॥ १२॥

नवनीत नागर करत निरतत, शिव विरंच मनमोहितम्।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा, बाल अद्‌भुत सुन्दरम्॥ १३॥

ग्वाल बाल सब सखा बिराजे, संग राधे भामिनी।
बंशीवट तट निकट यमुना, मुरली टेर सुहावनी॥ १४॥

भज राधेश्याम मुरारि उत्तम, परम राज कुमार जी।
सीता पति रघुनाथ श्रीपति, जगत प्राण अधार जी॥ १५॥

जनक राजा परण राख्यो, धनुष बाण चढ़ावहिं।
सती सीता नाम जाके, श्री रामचन्द्र प्रणामहिं॥ १६॥

जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्द के हिय नन्दनम्।
बाललीला पतित पावन, देवकी वसुदेवकम्॥ १७॥

श्री कृष्ण कलिमल हरण सब के, जो भजे हरि चरण को।
भक्ति अपनी देहु माधव, भव सागर के तरण को॥ १८॥

जगन्नाथ जगदीश स्वामी, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
श्री द्वारीका के नाथ स्वामी, केशवं प्रणमास्यहम्॥ १९॥

गनपति-बन्दन

गाइये गनपति जगवन्दन
संकर-सुवन-भवानी-नन्दन
सिद्धि-सदन, गजवदन, विनायक
कृपासिन्धु, सुन्दर सब लायक
मोदक-प्रिय मुद-मंगल-दाता
विद्या-वारिधि, बुद्धि विधाता
मांगत "तुलसिदास" कर जोरे
बसहिं रामसिय मानस मोरे १

कठिन मोहकी फांसे

तुम बिनु प्यारे, कहुँ सुख नाहीं।
भटक्यो बहुत स्वाद रस-लंपट ठौर ठौर जग मांही॥
प्रथम चाव करि बहुत पियारे, जाइ जहाँ ललचाने।
तहं तें फिर ऐसौ जिय उचटत, आवत उलटि ठिकाने॥
जित देखों तित स्वारथ ही की, निरस पुरानी बातें।
अतिहि मलिन व्यवहार देखि कें, घिन आवत है तातें॥
जानत भले तुम्हारे बिनु सब, बादहिं बीतत सांसे।
"हरीचन्द, नहिं छुटत तऊ यह, कठिन मोह की फांसे"॥ २

धन धन जननी तेनी रे

वैष्णवजन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे॥
सकळ लोकमां सहुने बंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे॥

समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन नाव झाले हात्थ रे।।
मोह माया व्यापे नहि जेने दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे।
राम नाम सूं ताळी लागी सकल तीरथ तेणां तन मां रे।।
वणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणें "नरसैयो" तेन, दरसन करतां, कुल इकोतेर तार्या रे।

प्रान ते प्यारो

जा के प्रिय न राम-वैदेही
सो छांड़िये कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषन बंधु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कंत व्रज-बनितनि, भये मुद मंगलकारी।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आंखि जेहि फूटे, बहुतक कहों कहाँ लौं।।
"तुलसी" सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रान ते प्यारो।
जासों होय सनेह राम पद, एतो मतो हमारो।।

करते पूर्ण काम

भज ले राधेश्याम मनवा भजले रे
प्रेम डोर से उसे बांधकर, रख ले आठों याम।
यह शरीर तो नाशवान है, ज्यों माटी का धाम।
छोड़ के पिंजरा उड़ जायेगा, पंछी अपने ग्राम।
भीड़ पड़े भक्तों पर उनके, करते पूर्ण काम।

कुंज कुंज लटकी

माईरी मैं तो गोविन्द सों अटकी
चकित भये हैं दृग दोऊ मेरे, शोभा लखि नट की।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, बनमाला टटकी।
"मीरा" प्रभु के संग फिरेगी, कुंज कुंज लटकी।।

नाचत नन्दकिशोर

सखी री म्हारो कानूडो कलेजे की कोर।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, नाचत नन्द किशोर।
मोर मुकुट पीताम्बर राजे, कुंडल की झकझोर।
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल चितजोर। ७

भजन विना भव कैसे तरेगा

तेरा हीरा जन्म बीता जाये, भजन कर गोविन्द का।
जाने कब आ जाये बुलावा, प्रभु के घर जाने का॥

कल कल करके टाल न भाई, बड़े भाग्य से नर देह पाई।
कर ले जग में नेक कमाई, काल बदरिया सिर पर छाई।
कब हंस तेरा उड़ जाये, भरोसा नहीं एक पल का॥ तेरा हीरा....

जग में तेरा कोई न बन्दे, क्यों तू भूला मूर्ख अन्धे।
जीते जी के हैं सब धन्दे, मरें तो घर लेजायें कन्धे।
कोई भी साथ न जाये, भजन कर गोविन्दका॥ तेरा हीरा....

कुटुम्ब की खातिर क्यों मरता है, मेरा मेरा क्यों करता है।
पाप की गठड़ी सिर धरता है, इस झगड़े में क्यों पड़ता है।
भटक-भटक मर जाये, भजन कर गोविन्द का॥ तेरा हीरा....

दो दिन का है रैन बसेरा, कोई न होवे साथी तेरा।
जिस दिन तुझ को काल ने घेरा, हो जायेगा जंगल में डेरा।
विरथा प्रेम लगाये, भजन कर गोविन्द का —॥ तेरा हीरा....

भजन बिना भव कैसे तरेगा, अवसर बीते हाथ मलेगा।
ठाठ तेरा सब यहीं रहेगा, भजन ही तेरे संग चलेगा।
फिर पीछे पछताये, भजन कर गोविन्द का॥ तेरा हीरा.... ८

कुछ नेकी खटलै

बेपरवाह नूं भूलाया लापरवाहियाँ कीतियाँ, की की जग बिच आनके कामईयाँ कीतियाँ।
अपने औगुणां वल्ल देखिया न झाती मार के, लोकां दियां रज्ज रज्ज के बुराईयाँ कीतियाँ।
अपने मन वाली मैल तेथों धोती न गई, जिसमदियां मल मल के सफाईयाँ कीतियाँ।
अपना कीता होया कौल तू निभाया मूल ना, करनी निन्दिया बोलना झूठ ए कमाईयां कीतियाँ।
मानुष्य चोला तैनुं मिलिया कुछ नेकी खट लै, हत्थ जोड़ के रुह "दासी" ने दुहाईयाँ दित्तियाँ। १

रो रो मेंह बरसाये

भज भगत सुदामा आये, प्रभुजी तेरे मिलने नूँ।
शकलों गंवार है, दुखिया लाचार है,
खड़ा बूहे बाहर है, हुक्म की सरकार है,
तन सुकड़ा नहीं गल कपड़ा, आज लाखों कष्ट उठाये। प्रभु.........
आखे बारम्बार, कृष्ण मेरा यार है,
ब्राह्मण कुमार है, चाहंदा दीदार है,
थर थर के नाले डर डर के, पिया सुन्दर वचन सुनाये। प्रभु.........
सुन के मुरार जी, झट दौड़े बाहर जी,
जफ्फा लीता मार जी, घुट कीता प्यार जी,
भज्ज भज्ज के मिले रज्ज रज्ज के, रो रो मेंह बरसाये। प्रभु.......
कड़े हत्थाँ नाल जी, कढे तत्काल जी,
चरण सँभाल जी, धोंवदे गोपाल जी,
बुक कर कर के पीते भर भर के, विच्चों भगत पिया शरमाये। प्रभु.......

मुखों यह उच्चारिया, बोल मेरे प्यारिया,
मैनुं मनों बिसारिया, ऐना वक्त गुज़ारिया,
निहाल कीता मालोमाल कीता, सब भगत के कष्ट मिटाये। प्रभु... १०

लागी नज़रिया

श्याम पिया मेरी रंग दे चुनरिया।
बिना रंगाये मैं तो, घर को न जाऊँगी।
बीत जाये चाहे, सारी उमरिया ।। श्याम ....
ऐसा रंग रंगदे मेरे प्यारे।
धोबी धोये चाहे, सारी उमरिया।। श्याम ....
"चन्द्रसखी" भज बाल कृष्ण छबि।
हरि चरणन से लागी नज़रिया।। श्याम ११

मैं कोई झूठ बोलिया

सोम सवाये भाग असाड़े, मानुष्य देही पाई।
ऐपर विषयां दे बिच फस के, ऐंवे उमर गंवाई।।
मैं कोई झूठ बोलिया ? कोई ना।
तां फिर राम नाम गुण गा लै, अपना जीवन सफल बना लै।

मैं कोई झूठ बोलिया ? कोई ना।।
मंगल मस्त होयों बिच माया, सोच न आई प्राणी।
खेल कूद में बचपन बीता, विषयां बिच्च जवानी ।।
मैं कोई झूठ बोलिया ? ....

बुध बुद्धि नाल सोच तूं बन्दिया, कितना पिया भुलेखा।
दो दिन तांई मँगना, तेथों धर्मराज ने लेखा।।
मैं कोई झूठ बोलिया ? ....

वीर वहा न नीर ते जो, कुछ बाकी बची वचा लै।
एहो तेरी असली पूँजी, शाम नाम गुण गा लै॥
मैं कोई झूठ बोलिया? ....

शुकर शुक्र कदे न कीता, उस दाते दे ताईं॥
मानुष्य जन्म अमोलक तैनुँ, बख्श दिया जिस सांईं॥
मैं कोई झूठ बोलिया? ....

शनि शौक जे प्रभु मिलण दा, कर लै नेक कमाईयां।
वक़्त विहाये पछतासें जे, कर गियों लापरवाहियां।
मैं कोई झूठ बोलिया? ....

ऐत इतबार तूं मेरे ते कर गल्ल असाडी मन्न लै।
लक्खां दी मैं इक सुणांवां, इस नूँ पल्ले बन्न लै॥ १२

गीताका ज्ञान सुना जाना

वंसी वाले हमारी गली आ जाना।
आ जाना फेरा पा जाना। वंसी वाले ....
आप भी आना संग राधा जी को लाना
सुन्दर रास रचा जाना॥
आप भी आना संग ग्वालों को भी लाना।
मटकी फोड़ गिरा जाना॥
आप भी आना संग शबरी को लाना।
वेरों का भोग लगा जाना॥
आप भी आना संग गऊयों को भी लाना।
हरी हरी घास खिला जाना॥
आप भी आना संग मीरा जी को लाना।
भक्ति का भाव दिखा जाना॥

आप भी आना संग अर्जुन को भी लाना।
गीता का ज्ञान सुना जाना ।।

आवो प्रभु अब देर न लावो।
"दासी" को दर्श दिखा जाना ।। १३

सन्त–दर्शन

सन्तन के संग लाग रे तेरी अच्छी बनेगी
अच्छी बनेगी बिगड़ी बनेगी। सन्तन के संग ....
सन्तन दर्शन अति सुखदाई, होत बड़ो तेरो भाग रे।
हंसों की गति हंस ही जानें, कोऊ न जाने काग रे।
सन्त तो तुझ को नित्य जगावें, जाग सके तो जाग रे।
छोड़ जगत के झूठे धन्दे, हरि सुमिरण में लाग रे।
कहत "कबीर" समझ ले साधु, कर सत्संग में राग रे। १४

चली मेरी जोड़ी

काया कैसे रोई चले जब प्राण रे
चलत प्राण काया यूँ रोई, छोड़ चला निर्मोही रे।
मैं जाना मेरे संग चलेगी, इसे कारण मल मल धोई ।।

ऊँचे नीचे मन्दिर छोड़े, गाय भैंस घर छोड़ी रे।
तिरिया तो कुलवन्ती छोड़ी, और पुत्रों की जोड़ी ।।

छोटी मोटी गजी बनाई, चढ़ा काठ की घोड़ी रे।
चार जनों ने मिल कर तुझ को, फूँका जैसे होली ।।

भोली तिरिया रोवन लागी, बिछुड़ चली मेरी जोड़ी रे।
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो, जिन जोड़ी उन तोड़ी ।।। १५

भवसागर तरले

बोलो जी मेरे शाम की जयजयकार
वे हैं सकल जगत के स्वामी, घट-घट के प्रभु अन्तरयामी
कर ले उसी संग प्यार।
दीनानाथ नाम दुःखभंजन, जपते योगी नाथ निरंजन
महिमा है अपरम्पार।
बिना भगवान नहीं कोई तेरा, क्यों करता है मेरा मेरा
भज ले तू कृष्ण मुरार।
शाम सबेरे सत्संग करके, ध्यान प्रभु का दिल में धर के
आवागमन निवार।
कृष्ण नाम का जाप तू कर ले, "दासी" कहे भवसागर तर ले
जीवन तू पाया है दिन चार। १६

नाचे नन्दलाल

मैं तो पनियाँ न जाऊँ, आगे मचि रह्यौ ख्याल री।
एक तो उतपाती कान्हा, दूजे संग ग्वाल री।
मेरो रूप अनोखो कहियें, जिया को जंजाल री।।
ढोल और मृदंग बाजे, और डफ तालरी।
मधुर-मधुर वंशी बाजे, नाचे नन्दलाल री।।
मोहिं देखि आवे कान्हा, मदगज चाल री।
हाथ में पिचकारी लाला, फेंट में गुलाल री।।
"नागरिया" मैं थर-थर कांपूं, भई हौं विहाल री।
पीरे पट वारो छैला, मदन गुपाल री।। १७

लौटाया नहीं करते

भक्त प्रभु के दिये संकट में डर जाया नहीं करते।
वह हर दुःख हंस के सहते हैं वे घबराया नहीं करते॥

बड़ी दुश्वार है घाटी भयानक राह है भक्ति की।
जो बुज़दिल हैं वह इस मैदान में आया नहीं करते॥

दुःखी देखें किसी को वह तो उनका मन तड़पता है।
किसी भी शरण आये को वे लौटाया नहीं करते॥

रहें हर हाल में खुश वह गरीवी में नहीं रोते।
मिले जो बादशाही तो वे इतराया नहीं करते॥

चाहे तो जान भी जाये न जाये पर धर्म प्यारे।
कदम रख धर्म रक्षा में पलट जाया नहीं करते॥ १८

देखत भई निहाल

झाँकी बनी विशाल बांके गिरधर की।
सोहत मोर मुकुट अति नीको, चन्द्र छिपे रवि लागत फीको।
गल बैजन्ती माल। बांके ....
बागो लाल केसरिया पटका, ता में रसिकन को मन अटका।
दुलहा मदन गोपाल। बांके ....
कनक कड़े किंकिणी नग बारी, बांको छैल बन्यो गिरधारी।
देखत भई निहाल। बांके ....
कुंचित केश गुलाबी चीरा, नाशामणी चिंबुक में हीरा।
रसिया नन्द को लाल। बांके ....
श्याम सँग राधा नव गोरी, देव सुमन वर्षें भरि झोरी।
मुदित भई सुरबाल। बांके १९

पल-पल तेरो रूप निहारूं

प्रभु मेरे जनम-मरण के साथी, नहिं विसरत दिन राती ॥
प्रभु मेरे०
तू देख्यां बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ॥
प्रभु मेरे०
ऊँचे चढ़-चढ़ पन्थ निहारूँ, रोय-रोय अखियाँ राती ॥
प्रभु मेरे०
पल-पल तेरो रूप निहारूँ, निरख-निरख सुख पाती ॥
प्रभु मेरे०
"मीरा" कहे प्रभु परम मनोहर, हरि चरणां चित्त राती ॥
प्रभु मेरे० २०

ऐसी प्रीति बढ़ी

नाचे मदन गोपाल सखी री, नाचे मदन गोपाल,
हाथ में मुरली कांधे कमली, गल फूलों की माल।

मुख पर मुरली धर कर मोहन, ऐसी मधुर बजाई, ऐसी मधुर बजाई
सुध-बुध अपनी खो बैठी मैं, हुई सखी बौराई।
कह सकूँ न दिल का हाल सखी, हाथ में........

देख सलोनी सूरत उसकी, मन हाथों से जाये, मन हाथों से जाये
लाख मनाऊँ दिल न माने, याद न दिल से जाये।
कुछ दिया है जादू डाल सखी, हाथ में ....

ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन, गोपिन नाच नचाई, गोपिन नाच नचाई
श्याम सुन्दर मनमोहन की मैं, किस मुख करूँ बड़ाई।
मिल बोलो जै गोपाल, सखी, हाथ में २१

नौकर तू घर का

तुझे लीना यशोदा ने मोल, बात मेरी सुन सांवरे;
आज देती हूँ यह भेद खोल, बात मेरी सुन सांवरे।
यशोदा भी गोरी नन्द बाबा भी गोरे,
भैय्या तेरे बलराम भी गोरे।
तू तो है काला कलोल, बात मेरी सुन सांवरे।
भैय्या को तो मैय्या माखन खिलावे,
तेरे से मैय्या रानी गैय्या चरावे।
नौकर तू घर का है बोल, बात मेरी सुन सांवरे।
ऊखल से बान्धे मैय्या छड़ियों से मारे,
भैय्या को गोदी में ले ले दुलारे।
हम से संभल के तू बोल, बात मेरी सुन सांवरे। २२

प्रेम जरा अजमाले

वन्दे राम नाम गुण गाले
दो घड़ियाँ दा सत्संग ला ले
सत्संग कल्प-वृक्ष की न्याईं, जो मांगे मिल जाई।
तेरे मन में मूढ़ मूर्खा, जो निश्चय नहीं आई।
करके प्रेम ज़रा अजमा ले, वन्दे राम ....
उस्तत निन्दिया जग बिच दुनियां सब दी करदी आई ऐ।
खुश हुन्दे ने पापी पाप करके ते भलियाँ नाल बुराई ऐ।
इनसे अपना आप बचा ले, वन्दे राम ....
सत्संग नाम बड़ा अनमोला तू ने कदर न पाया है।
फंस विषयां बिच मूर्ख तूने हीरा जन्म गंवाया है।
अब तो करनी पर पछता ले, वन्दे राम ....
मन अपना काबू बिच करके दुनियाँ तों मुख मोड़ो।

जिसने पार लगाना वेड़ा उस संग प्रीति जोड़ो।
धन नेकी दा खूब कमा ले, बन्दे राम ....
इस दुनियाँ ते मूल न रक्खीं आशा कदी तूं नेकी दी।
हर दम पढ़ीं मुहारनी बन्दे राम नाम सिया पी की।
जीवन अपना सफल बना ले। २३

ज्ञान दी तकडी

राम नाम नित्त बोले रसना प्रेमी दी।
कृष्ण नाम नित्त बोले रसना प्रेमी दी।
जित्थे काम क्रोध न बसे, मन मस्ताना हर दम हस्से।
सिदकों कदी न डोले रसना प्रेमी दी।
राम नाम रस ऐसा मिट्ठा, सो जाणे जिस पी के डिट्ठा।
ज़हर च अमृत घोले रसना प्रेमी दी।
ए जग जाने एक समुन्द्र, ला ला गोते इस दे अन्दर।
सुच्चे मोती रोले रसना प्रेमी दी।
झठ कपट दा सौदा छड के, मोह माया नूं दिल चों कढ के।
ज्ञान दी तकड़ी तोले रसना प्रेमी दी। २४

तेरे जीवन पर धिक्कार

हरि की महिमा अपरम्पार
मनवा भज ले कृष्ण मुरार
वेद भी जब बेअन्त कह गये, क्या जाने संसार।
ऐ प्राणी तू शाम सबेरे, राम ही राम उच्चार।
कई कहते हैं ईश्वर का, नहीं हो सकता अवतार।
किन्हीं ने नरसिंह रूप में, दर्शन किये अपार॥
अजामिल पापी के पापों का, था कौन शुमार।
उल्टा नाम जपा था फिर भी, हो गया बेड़ा पार॥

इसी तरह गंगा थी मानो, पापों का भंडार।
पश्चाताप किया जब उसने, आ गये तारनहार।।

तारनहार न तारे जब तक, मिले न मन की तार।
तार मिले तो तार-तार से, निकल आये करतार।।

तेरे पर जब मेहरबान हैं, वह सच्ची सरकार।
फिर भी नाम न जपे तो, तेरे जीवन पर धिक्कार।। २५

पार लगाजा

आ जावो शाम सांवरिया, मुखड़ा दिखला जा,
रोते हैं नैन वांवरे, इनको समझा जा।

पहले तो मन को चुराया, तन मन का होश भुलाया,
पीछे से क्यों विसराया गोकुल के राजा।

मेरे चित्तचोर कन्हैया, ओ भवसागर के खेवैय्या,
डोले मँझधार में नैय्या पार लगा जा।

सखियां तेरी बाट निहारें, रो-रो कर तुझे पुकारें,
बहतीं अँसुअन जल धारें इनको सुखा जा। २६

देख दुर्गुण अपने सदा

गाना चाहे तो राम नाम गाया कर बन्दे,
खाना चाहे तो हक की रोटी खाया कर बन्दे।

देना चाहता है तो दीनों को सुख शान्ति दे,
लेना चाहे तो यश ले भला कहाया कर बन्दे।

मारना चाहता है तो मार सदा बुरी इच्छा को,
त्यागना चाहे तो काम क्रोध हटाया कर बन्दे।

मोल लेना है तो मोल ले सदा सदाकत को,
तोलना चाहे तो वाणी तोल सुनाया कर बन्दे।

देखना चाहे तो देख दुर्गुण अपने सदा,
सुनना चाहे तो सत्संग में तू जाया कर बन्दे।
बनना चाहे तो बन जा दास मनमोहन का तू,
तरना चाहे तो गुरु शरण में जाया कर बन्दे। २७

छोड़ बुरों की संगत

अब तो भजन कर भाई रे, तेरी बीती उमरिया
पाप की गठरी सिर से पटक दे,
मोह माया को मन से झटक दे
धर्म की पकड़ कलाई रे। तेरी ....
छोड़ बुरों की संगत भाई
कर सत्संग और जग की भलाई
यही रीति सुखदाई रे तेरी ....
नाम हरि का पाप मिटावे
डूबती नैय्या पार लगावे
क्या-क्या करुं मैं बड़ाई रे। तेरी ....
प्रभु से अपनी लगन लगा ले
सोई हुई किस्मत को जगा ले
इसी में तेरी भलाई रे। तेरी ....
निश दिन पर उपकार कमाओ
प्रेम से मिल कर हरि गुण गाओ
"दासी" ने विनती सुनाई रे। तेरी २८

गुरु-महिमा

धरो रे मन गुरु चरणों का ध्यान।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु जानो, गुरु है शिव के समान।
धरो रे मन ....

गुरु गँगा गुरु यमुना जानो, गुरु हैं सिन्धु समान।
धरो रे मन . . . .
मल विक्षेप दूर हो जावे, दूर होवे अज्ञान।
धरो रे मन . . . .
चोरी चुगली अरु पर निन्दा, छूटें ये सब बान।
धरो रे मन . . . .
यह अवसर तोहे फिर न मिलेगा, कहना मेरा मान।
धरो रे मन . . . .
बिन गुरुदेव नहीं कोई ऐसा, जिस से हो कल्यान।
धरो रे मन . . . .
'दासी, कहे गुरु महिमा भारी, जानत सकल जहान। २९

उत्तम फल पाया

इस संसार में रे कोई सुखी नज़र नहीं आया।
कोई प्राणी धन बिना दुखारी चिन्ता में चित्त पाया।
भोजन भी भरपेट मिले न सूख गई है काया॥
धन के तो भँडार भरे हैं तन में रोग समाया।
निश दिन कड़वी खात दवाई संग न देती काया॥
तन निर्मल और धन बहुतेरा फिर भी चैन न पाया।
पूजत फिरत सदा भूतन को पुत्र न मैंने पाया॥
तन निर्मल धन पुत्र है पाया तो फिर भी है घबराया।
कहता है प्रभु तूने मुझ को राजा नहीं बनाया॥
वही सुखी है जग में प्यारे जिन प्रभुसंग ध्यान लगाया।
उसी ने अपने मानव जीवन का उत्तम फल पाया। ३०

यमदूतों की मार से डरना

गुण मोहन के गाओ सखी री गुण मोहन के गाओ
प्रेम भक्ति वर पाओ सखी री गुण मोहन के गाओ

ऐसा प्यारा नाम कन्हैया, पार लगावे डूबती नैय्या।
उसी का ध्यान लगाओ।
प्रभु चरणों में ध्यान लगाना, इससे न बढ़ कर और ठिकाना।
जन्म सफल कर जाओ।
दुनिया है यह गोरख धन्दा, भेद समझता कोई कोई बन्दा।
इसमें मत भरमाओ।
यमदूतों की मार से डरना, निश दिन हरि का सुमिरण करना।
आवागमन मिटाओ।
"दासी" कहे सुनो रे भाई, भक्तों का धन कृष्ण कन्हाई।
उसी को मीत बनाओ। ३।

भारत के भाग जगा जा

दुःख भंजन कृष्ण मुरारी भारत के प्यारे आ जा,
दुखिया भारत माता की आँखों के तारे आ जा।

तुम बिन ऐ श्याम मुरारी, दुखिया है भारत सारी,
हो गई है बहुत लाचारी, गीता का कौल निभा जा।
दुःख भंजन....

तुम बिन ऐ शाम प्यारे, बिगड़ी को कौन सुधारे,
नैय्या के खेवन हारे, नैय्या को पार लगा जा।
दुःखभंजन....

आपस में प्रीत नहीं है, ऋषियों की रीत नहीं है,
किस्मत में जीत नहीं है, बाजी हम हारे आ जा।
दुःखभंजन....

तेरे दर आये भिखारी, रख ले अब लाज हमारी,
रो रो कर तुझे पुकारी, भारत के भाग जगा जा।
दुःखभंजन....२

पैग़ाम

तुझे हरि का आया है पैग़ाम हँन्सा छोड़ नगरी।
यम हंसा को लेने आये, हंसा फिरे कुठरी कुठरी।
हंसा कहे यम ठहर जाओ तुम, माया पड़ी इखरी बिखरी।
यह कहते हम नहीं ठहरेंगे बांध ले तू गठरी मुठरी।
अन्त चला यह हंस अकेला, छोड़ चला दमड़ी दमड़ी।
अब भी चेत संभल जा प्राणी, भज मन मेरे हरि हरि। ३३

ग्वार फल्यां कौ साग

थे तो आरोगो जी मदन गोपाल करमा बाई रो खीचड़ लो

थारा प्रेम पुजारी प्रभुजी गया है तीरथ न्हान।
जातां जातां दे गया म्हानें पूजा की सम्हलान॥
जद मैं आई थारें मंदरिये में चाल। करमा बाई रो......

हूँ तो दीन अनाथनी नाहीं जानूं पूजा फन्द।
नयो नबादो ले लियो ये धन्दो गोकुल चन्द॥
थे तो राखड़ियां भक्तां दी बाजी भाल। करमा बाई रो.....

नहीं जानूं जी खटरस व्यंजन खाटो सो अनुराग।
बाजरिया कौ राम खीचड़ौ ग्वार फल्यौं कौ साग ;॥
ल्याई वाटकी में मीठो दही घाल। करमा बाई रो.......

क्यों रूसा बैठा हो प्रभु जी रुक्मणि जी रा स्याम।
भूखा मरता बने न सौदो मास दिवस कौ काम॥
भूखा मरत्तां का चिप जासी थारा गाल। करमा बाई रो......

जाण गई सरमाया प्रभुजी लख मोहिं नई नवाद॥
धावकिया को परदो कीनो प्रगट लियो परसाद॥
हरष्यो हीवड़े में मिस्सर मोती लाल। करमा बाई रो...... ३४

प्याला पिये जा

वेदामृत का प्याला पिये जा, होकर तू मतवाला पिये जा।
गीतामृत का प्याला पिये जा, राम नाम रस प्याला पिये जा॥
ऋषियों और देवों ने मिल कर, श्रम कर ज्ञान सिन्धु को मथकर।
हैं यह रत्न निकाला पियेजा
जो हर दिल से द्वेष हटाती, ऊँच नीच का भाव मिटाती।
है यह वह मधुशाला पिये जा
पी सकते इसको सब भाई, हिन्दू मुसलिम सिख इसाई।
गोरा हो चाहे काला पिये जा
एक घूंट जो इसकी पीवे, मस्त रहे जब तक भी जीवे।
मन में होय उजाला पिये जा
पीते ही निर्भय हो जावे, डरे न चाहे कोई डरावे।
ले के बर्छी भाला पिये जा
पी प्रियतम को मन में पावे, भला बुरा प्रत्यक्ष दिखावे।
चढ़ जाये रंग निराला पिये जा

वंशी का तराना

मोहन मुकुन्द माघव दर्शन हमें दिखाना,
करते हैं याद तुझ को हम को न भूल जाना।
सुध बुध रहे न जिससे, दुनियां को भूल जाऊँ।
वह तान फिर सुना दे वंशी का वह तराना।
दिल में बहा दे सब के भक्ति की ऐसी गंगा।
हो जाये पाक जिसकी लहरों से फिर ज़माना॥
अर्जुन को रण में जिसने मुक्ति की राह दिखाई।
गीता का ज्ञान मोहन ऐसा हमें सुनाना।
तेरे ही दर पै मोहन मिलती है चैन दिल को।
तेरे सिवा कहीं पर मिलता नहीं ठिकाना॥

प्रभु तूने संवारा है

मुझे क्या काम दुनियां से मेरा श्रीकृष्ण प्यारा है।
यशोदा-नन्द का लाला मेरी आँखों कां तारा है ॥
गये थे आप मथुरा को वहाँ जा कंस को मारा।
उठाया नख पै गिरवर को इन्द्र का मान मारा है।
तू ही माता, तू ही पिता, तू ही बन्धु हमारा है।
तू ही इस देह का मालिक मुझे तेरा सहारा है।
तेरे सेवक तेरी आशा पै जब कुछ काम कर बैठें।
विगड़ता काम भक्तों का प्रभु तूने संवारा है।
तू अपने चाकरों की लाज रखता ही सदा आया।
कभी संकट में न उनसे किया तू ने किनारा है ॥ ३७

मेरी श्रद्धा को देख

मेरी झोंपड़ी के भाग आज खुल जायेंगे जी राम आयेंगे।
उन चरणों पै आंसू मेरे गिर जायेंगे जी राम आयेंगे।
आये बन में हैं राम आई सुन के, हां सुन के।
लाई मीठे - मीठे बेर चुन-चुन के चुन-चुन के।
इन बेरों का प्रभु आज भोग लायेंगे, जी राम आयेंगे।
राम देखने की लगी मोहे आस जी, हां आस जी।
राम आयेंगे यह पूरा विश्वास जी, विश्वास जी।
फिर किस तरह वे दाता मुझे भूल जायेंगे, जी राम आयेंगे।
राम ऊंची नीची जात नहीं देखते, नहीं देखते।
अच्छी बुरी भी सौगात नहीं देखते, नहीं देखते।
मेरी श्रद्धा को देख प्रभु भोग लायेंगे जी राम आयेंगे।
मैं पूजा पाठ की भी रीत नहीं जानती, नहीं जानती।
करूं कैसे मैं प्रीत नहीं जानती, नहीं जानती।
दयावान हैं वे बेड़ा मेरा पार लायेंगे जी, राम आयेंगे। ३८

हाथ न आवे

यही घड़ी यही बेला साधो, यही घड़ी.......
लाख खर्च फिर हाथ न आवे, मानुष्य जन्म सुहेला।
न कोई संगी न कोई साथी, उड़ेगा भँवर अकेला।
भुगतेंगे सब अपनी करनी, क्या गुरु है क्या चेला।
क्यों सोया उठ जाग सबेरे, जप ले राम अलबेला।
कहत "कबीर" गोबिन्द गुण गा ले, चार दिनों का मेला। ३९

प्यार भरा है नयन में

आज रे नन्द के भवन में, ब्रज के मधुबन में
शाम मेरे आयेंगे।
आसो पालव के तोरण बन्धावो, घर-घर दीप जलाओ।
घर आंगन में चौक पुरावो, केसर चन्दन छिड़काओ।
छाया आनन्द ग्वालन में, ब्रज के बालन में। शाम मेरे.....
जमुना का जल उमड़ रहा है, लेता घोर तरंग।
राधा के मन की कोई न पूछो, कैसी आज उमंग।
प्यार भरा है नयनन में, न सुध तन मन में। शाम मेरे....
गायें आज खड़ीं राहों पै, बछड़ों में हल चल।
प्रेम मग्न हो सखियाँ भूलीं, भरना जमुना जल।
ध्यान लगा है कृष्ण में, जी नन्द नन्दन में। शाम मेरे.....
राधा रानी बलि बलि जाये, आये कृष्ण कन्हाई।
आरती करत सकल नर नारी, और यशोदा माई।
धूम है कुँज गलियन में, सभी सखियन में। शाम मेरे.....
आये मेरे नैनों के तारे, आये नन्द दुलारे।
भक्तों ने मिल दर्शन पाये, जागे भाग हमारे।
बरसे हैं फूल गगन में, सभी हैं मगन में। शाम मेरे..... ४०

प्रेम की ज्योति

राम नाम तू जप ले बन्दे, कृष्ण नाम तू जप ले बन्दे, जीवन बीता जाये,
कुछ कर ले उपाय।

मानुष्य जन्म अमोलक तेरा, इसको नहीं गंवाना,
खाली हाथ जगत में आया खाली आखिर जाना।
कुछ साथ न जाये।

हाथ पांव से धर्म कमा ले, दान करे और खाये,
मीठा वचन कहो तुम मुख से, प्रभु संग प्रीत लगाये।
जो होत सहाये।

दीन दुखी का कष्ट मिटा कर, जीवन सफल बना ले,
अपने मन-मन्दिर के अंदर, प्रेम की ज्योति जगा ले।
भव से तर जाये।

कोई नहीं है तेरा साथी, बिन राधा गोपाल,
"दासी" कहे सुनो री बहनों छोड़ो जग जंजाल।
उसी को मीत बनाये। ४१

रूठे प्रभु को कैसे मनाऊँ ?

तेरे दरबार आई हूँ, फूल श्रद्धा के लाई हूँ,
प्रभु भूली हुई, भूली हुई।
जो भी पिता तेरी शरण में आया, शरण में आया
उसने पिता तेरा आनन्द पाया, आनन्द पाया।
मैं भी प्यासी आई हूँ, दर्शाभिलाषी आई हूँ,
प्रभु भूली हुई, भूली हुई।
शरण पड़ी हूँ न ठुकराना, न ठुकराना।
डूबने से प्रभु पार लगाना, पार लगाना।

पापों से घबराई हूँ, नामधन लेने आई हूँ,
प्रभु भूली हुई, भूली हुई।
ढँग न जानूं कैसे रिझाऊँ, कैसे रिझाऊँ।
रूठे प्रभु को कैसे मनाऊँ, कैसे मनाऊँ।
खाली हाथ आई हूँ सेवा में कुछ न लाई हूँ,
प्रभु भूली हुई, भूली हुई। ४२

शाम मेरा आ गया

नन्द दा दुलारा साडा मखन चुरा गया।
वंसी बजा के साडा दिल परचा गया॥
ग्वाल बालां नूं लै के गऊआँ चरांवदा,
जमुना किनारे उत्ते रास रचांवदा।
वंसी बजा के सब दामन भरमा गया॥
नरसी भक्त ने तैनुं सांवल बनाया सी,
धन्ने ने पत्थर बिचों दर्शन पाया सी।
मीरा दी खातिर गिरधर बन के तू आ गया॥
रल मिल तैनूं अज भक्त पुकारदे,
छेती आवो श्याम प्यारे अरज़ां गुज़ारदे।
दुखिया दियां अरज़ां सुन के शाम मेरा आगया॥ ४३

लीला जग से न्यारी है

हे आशुतोष भगवान, करो कल्याण, बाघम्बर बाले,
शिवशंकर भोले भाले॥
तुम तन पै भस्म रमाते हो, गंगा जी जटा समाते हो।
डमरू त्रिशूल धरे नन्दी सवारी वाले। शिवशंकर भोले भाले॥
तुम तीन लोक के स्वामी हो, अविनाशी अन्तरयामी हो।
हो जग के कर्त्ता संहर्त्ता रखवाले। शिवशंकर भोले भाले॥

तेरी लीला जग से न्यारी है, हितकारी मंगलकारी है।
हो सब देवन के देव जगत उजियाले। शिवशंकर भोले भाले।
तुम भोलेनाथ कहाते हो, भक्तों के मन को भाते हो।
कर दो निहाल सर्पों की माला वाले। शिवशंकर भोले भाले॥ ४४

राम कहानी

बन्दे क्यों करता नादानी, तेरी काया आनी जानी,
और यह जीवन ऐसे बीते, जैसे बहता जाये पानी।
निकल जायेगा स्वांस का पंछी ओ मूर्ख दीवाने। ओ......
कोई न संग चलेगा तेरे जिसको अपना जाने। जिसको....
मिट्टी में मिल जाये जवानी, रह जायेगी राम कहानी। और यह जीवन......
दुनियां के धन्दों में फंस कर भूला अपने वादे। भूला......
अभी समय है हरि सुमिरण कर अपना वचन निभा दे। अपना......
है भक्तों की अमर कहानी, बाकी सारी दुनियां फानी। और यह जीवन.......
न कोई तेरा न तू किसी का झूठा, जग का नाता। झूठा...
आयु तेरी बीती जाये क्यों न हरि गुण गाता। क्यों न......
करता रहा सदा मनमानी, मानुष्य देह की सार न जानी। और यह जीवन...... ४५

वेगि मिलो अविनाशी

बंसी शाम की बाजी, मीरा घुंघरू बांध कर नाची।
लोक कहें मीरा भई रे बांवरी, सास कहे कुल नासी। मीरा.....
मैं तो अपने शाम सुन्दर की, आपही हो गई दासी। मीरा.....
राणा ने भेज्या ज़हर प्याला, पीवत मीरा हांसी। मीरा.....
राणा ने भेज्या नाग पिटारा, हरि मूर्ति हो जासी। मीरा.....
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर, वेगि मिलो अविनाशी। मीरा..... ४६

पल छिन याद सताये

ओ कैलाशी त्रिपुरारी बम्भोले हम तेरी शरण में आये।
थां सैं म्हारी प्रीत पुरानी जान सके न कोय,
विना मिले न होय सबूरी मिलना किस विध होय।
नित्य जोऊँ बाट तिहारी बम्भोले, तेरे द्वार पै नैन बिछाये ।।
भालचन्द्र मस्तक में गँगा सर्पों का श्रृङ्गार,
बन कर खेवन हार त्रिलोचन नैया कर दो पार।
अब रख लो लाज हमारी बम्भोले, तेरा पार न कोई पाये ।।
अपनी कहानी तुम को सुनाई अब तो खोलो नैन,
नीलकँठ कछु मुस्काओ तो दिल में आवे चैन।
ओ दीनों के हितकारी बम्भोले, तेरी पल छिन याद सताये ।।
अपने भी हो गये पराये कैसा यह संसार,
अपनी मुरली सभी बजाते आँखों देखा प्यार।
यह झूठी दुनियांदारी शिव भोले, तन मन में तुम्हीं समाये ।। ४७

सुख और दुःख

मन मेरो न माने मनाय हारी रे
शाम सुन्दर के ललित रूप में, लागत नाहीं लगाय हारी रे।
काम क्रोध और लोभ मोह को, छोड़त नाहीं छुड़ाय हारी रे।
निज हित अमहित सुख और दुख को, बूझत नाहीं बुझाय हारी रे।
कुबुद्धि, कुकर्म, कुसंग कुपथ से, हटत नाहीं हटाय हारी रे।
प्रभु भक्ति और सत्संग अन्दर ठहरत नाहीं ठहराय हारी रे। ४८

तज दे आलस

सारे जग के जंजाल त्याग, भज कृष्ण हरे भज कृष्ण हरे।
संसार स्वप्न की माया है,
इसने सबको भरमाया है।

करके जग से अपना वैराग, भज कृष्ण हरे........
तन से सारे अभिमान तजो,
मन से निश दिन भगवान भजो।
तज दे आलस उठ जाग-जाग, भज कृष्ण हरे.........
झूठा जीवन का आना है,
झूठा जीवन का जाना है।
झूठे जग के हैं सभी राग, भज कृष्ण हरे........
तू संत शरण में जा भाई,
बिगड़ी तकदीर बना भाई।
जग के विषयों से दूर भाग, भज कृष्ण हरे........ ४९

लौ लगा ली जायेगी

झोंपड़ी ब्रज में बना ली जायेगी,
ब्रज की रज तन में रमा ली जायेगी।
श्याम प्यारे अब हमारे हो गये,
अब उन्हीं से लौ लगा ली जावेगी।
ब्रज की गलियों में फिरेंगे झूमते,
बिगड़ी किस्मत अब बना ली जायेगी।
श्याम श्यामा भी मिलेंगे कुञ्ज में,
"दासी" चरणों से लगा ली जायेगी। ५०

पहुंच गुरू के पास

रे मन मूर्ख कब तक जग में जीवन व्यर्थ बितायेगा,
राम नाम नहीं गायेगा तो अन्त समय पछतायेगा।
जिस जग में तू आया है यह एक मुसाफिर खाना है,
सिर्फ रात भर रुक कर इसमें सुबह सफर कर जाना है।

लेकिन यह भी याद रहे स्वासों का पास खजाना है,
जिसे लूटने को कामादिक चोरों ने प्रण ठाना है।
माल लुटा बैठा तो घर जाकर क्या मुंह दिखलायेगा।
शुद्ध न की वासना हृदय की बुद्धि नहीं निर्मल की है,
झूठी दुनियांदारी से क्या? आश मोक्ष के फल की है।
अब भी कर जो करना हो क्यों देर आज या कल की है,
तुझ को क्या है खबर जिन्दगी तेरी कितने पल की है।
यम के दूत घेर जब लेंगे तब क्या धर्म कमायेगा।
पहुँच गुरु के पास ज्ञान के दीपक का उजियाला ले,
कण्ठी पहन कण्ठ में जप की कर सुमिरन की माला ले।
खाने को दिलदार रूप का रसमय मधुर नेवाला ले,
पीने को प्रीतम प्यारे के प्रेम तत्त्व का प्याला ले।
यह न किया तो आँखों से आँसू के बिन्दू बहायेगा। ५१

उर धरी ध्यान करूं

जय जय जय श्री देवकी नन्दन

वृन्दावन सुख सर मराल मनु, मधुकर चरण कमल ब्रज चन्दन
प्रेम भक्ति रस रासि कृपामय, उर धरि ध्यान करूँ पग वन्दन
"श्यामदास" नित लहि शरणागति, याचत रतिपद यशुमतिनन्दन। ५२

पत्थर भी तरेंगे

हरि से बड़ा हरि का नाम
अन्त में निकला यह परिणाम

सुमरिये नाम रूप बिन देखे कौड़ी लगे न दाम,
नाम के बान्धे बन्धे आयेंगे आखिर इक दिन राम। हरि से बड़ा......
नामी को चिन्ता रहती है नाम न हो बदनाम,
द्रौपदी ने जब नाम पुकारा झट आ गये घनश्याम।

जिस सागर को विना सेतु के फान्द सके न राम,
कूद गये हनुमान उसी को ले कर प्रभु का नाम।
वह दिल वाले डूब जायेंगे जिनमें नहीं है नाम,
वह पत्थर भी तरेंगे जिन पर लिखा होगा श्रीराम।
चाकर बन जा श्याम सुन्दर का हो बेदाम गुलाम,
सियाराम को सुमिर सबेरे शाम को राधे श्याम। ५३

बन गई

मेरी बन जायेगी गोविन्द गुण गाये से
मेरी बन जायेगी गोपाल गुण गाये से

मीरा की बन गई अहल्या की बन गई, गणिका की बन गई तोते को पढ़ाये से।
ध्रुव की बन गई प्रह्लाद की बन गई, सुदामा की बन गई तन्दुल के खिलाये से।
नन्दा की बन गई नरसी की बन गई, शबरी की बन गई बेरों के खिलाये से।
विदुर की बन गई विभीषण की बन गई, कुब्जा की बन गई हारों के पहनाये से।
धन्ने की बन गई सदने की बन गई, हनुमान की बन गई सीता सुधि लाये से।
तुलसी की बन गई बाल्मीक की बन गई, नारद की बन गयी वीणा के बजाये से। ५४

गंदगी फरोली नां

बिना राम दे तू किसी नाल प्यार न करीं, ओ मना ! याद रखीं
सोना छड्ड के तू मिट्टी दा व्यापार न करीं, ओ मना ! याद रखीं
जे कोई मन्दा बोल बोले अगों बोलीं ना,
देखीं बन्दा हो के गन्दगी फरोलीं ना।
कौड़ी तकरीर नाल तकरार न करीं, ओ मना याद रखीं।
जे तू नेड़े जाणा चाहें भगवान दे,
पंजा वैरियाँ नूं नेड़े भी न आन दे।
काम क्रोध लोभ मोह ते हँकार न करीं, ओ मना याद रखीं।

गेड़े मुड़ के चौरासियां दे खाईं ना,
ऐहो बेला है सुनहरी चुक जाईं ना।
देखीं अपने उद्धार दा उधार न करीं, ओ मना याद रखीं। ५६

डारी प्रेम जंजीर

मीरा ने लाई जैसी प्रीत जी कोई ला दिखलावो

मीरा ने छोड़े रिश्ते नाते, छोड़े अम्मां जाये वीर जी, कोई छोड़ दिखलावो।
मीरा ने छोड़े गहने और कपड़े, पहन लिये वल्कल चीर जी, कोई पहन दिखलावो।
मीरा ने त्यागी महल अटारी, जा बसी जमुना जी के तीर जी, कोई जा दिखलावो।
राणा ने भेजा जहर प्याला, बन गया अमृत नीर जी, कोई पी दिखलावो।
राणा ने भेजा नाग पिटारा, बनी हरि की तसवीर जी, कोई खोल दिखलावो।
इत उत मनवा कबहूँ न डोले, डारी प्रेम जंजीर जी, कोई डाल दिखलावो।
"मीरा" के प्रभु हरि अविनाशी, उसी को बना कर अपना मीत,
नैय्या पार लगावो। ५७

छिप न जाना

दे दर्शन गिरधारी रे सांवरिया
मैं जाऊँ बलिहारी रे सांवरिया
सिर पै सुन्दर मुकुट है साजे, पीताम्बर कर मुरली विराजे।
कुँडलो की छवि न्यारी रे सांवरिया।
ऐसी छवि जब देखूं प्यारे, कट जायेंगे पाप हमारे।
यही आशा है हमारी रे सांवरिया।
तार्यो तू ने सदन कसाई, रांका बांका मीराबाई।
भक्तों का हितकारी रे सांवरिया।
दुर्योधन के मेवे त्यागे, साग विदुर घर मीठा लागे।

धन्य तेरी महिमा वनवारी रे सांवरिया।
गज के ग्रह से फंद छुड़ाये, द्रुपद सुता के चीर बढ़ाये।
धन्ने भक्त की बीजी क्यारी रे सांवरिया।
लाखों भक्त जन तू ने तारे, विनती यही है कृष्ण मुरारे।
छिप न जाना मेरी वारी रे सांवरिया। ५८

गिरधर हाथ बिकानी

आली री मेरे नैणां बाण पड़ी

चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी।
कब की ठाढ़ी पँथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण पिया बिन राखूं, जीवन मूर जड़ी।
"मीरा" गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहें बिगड़ी। ५९

बहुत ही नाच नचायो

मैं नहीं माखन खायो, मैय्या मोरी

भोर भई गईयन के पाछे मधुवन मोहि पठायो,
चार पहर बंसी बट भटक्यो सांझ भई घर आयो॥ मैय्या....
तूं जननी मति की अति भोली इनके कहे पतियाओ,
ग्वाल बाल सब वैर करत हैं जान परायो जायो॥ मैय्या.....
यह ले अपनी लकुटी कमरिया बहुत ही नाच नचायो,
"सूर" श्याम तब विहँसी यशोदा ले उर कंठ लगायो॥ मैय्या..... ६०

दरश की प्यासी

आना आना रे मोहन मेरी गलियाँ
घिस-घिस चंदन लेप लगाऊँ।
धोऊँ चरणन की तलियाँ॥ आना......
तेरे कारण हार बनाऊँ।

चुन-चुन फूलन की कलियाँ ॥ आना......
प्रेम सहित मैं भोग लगाऊँ।
माखन मिशरी की डलियाँ ॥ आना......
"ब्रह्मानंद" दरश की प्यासी।
मोर मुकुट पर जाऊँ बलियाँ॥ आना...... ६१

तुम बनो राधिका

श्याम तेरी मुरली मैं नेक वजाऊँ
जोइ-जोइ तान भरो मुरली में, सोई-सोई गाय सुनाऊँ सांवरे।
हमरी बिंदिया तुम ही लगावो, मैं सिर मुकुट धराऊँ सांवरे।
हमरे भूषण तुम सब पहिरो, मैं तुमरे सब पाऊँ सांवरे।
तुम दधि बेचन जाओ बृन्दावन, मैं मग रोकन आऊँ सांवरे।
तुम्हरे सिर पर माखन मटकी, मैं मिल ग्वाल लुटाऊँ सांवरे।
तुम तो प्रिय मानिनी बन बैठो, मैं पड़ पाँव मनाऊँ सांवरे।
"सूर" श्याम तुम बनो राधिका मैं नन्दलाल कहाऊँ सांवरे। ६२

क्यों न हाथ बटाये

आओ भैय्या रल मिल गायें महिमा उस भगवान की,
हानि कहीं न होने पाये इस जीवन महान की।
जय जय सीताराम बोलो जय जय राधेश्याम।
मानुष्य चोला पाकर क्यों माटी में इसे मिलाये तू।
फानी जीवन तेरा है न गीत प्रभु के गाये तू॥
दीन दु:खी की सेवा में रे क्यों न हाथ बटाये तू।
विषय विकारों में फंस कर क्यों हीरा जन्म गंवाये तू॥
बन जा प्रभु का दास तू बन्दे तज माया जहान की।
हानि कहीं न होने पाये................।
दीन दयालु शाम मेरा सारे जग का सहारा है।

भक्तों को वह तारने वाला पापी मारने वाला है।
कुल दुनिया का स्वामी है पर तीन लोक से न्यारा है।
घट-घट वासी है अविनाशी जग का पालन हारा है॥
गाई जा सकती नहीं मुझ से महिमा दयानिधान की।
हानि कहीं न होने पाये................। ६३

मददगार

कर ले राम को तू याद बारम्बार रे बन्दे
राम सच्ची है सरकार अवगुण हार रे बन्दे
सच्चे राम की पुकार, गाड़ी खड़ी है तैयार,
होना सब ने है सवार, बारो बार रे बन्दे।
गाड़ी ऐसे शहर को जावे, वहाँ से वापिस फिर नहीं आवे,
जो कोई पल्ले खर्च ले जावे, करे बहार रे बन्दे।
गाड़ी आकर खड़ी है होई, मुसाफिर उतर गया सब कोई,
जिस के पल्ले टिकट न होई, ओ गिरफ्तार रे बन्दे।
जब उसे पुलिस औफिसर पकड़े, बन्द हवालात में कर दे,
वे तो ज़रा दया नहीं करते, पड़ेगी मार रे बन्दे।
जे चाहो तुम मार से बचना, निश दिन राम नाम को जपना,
अन्त समय में राम ही तेरा, मददगार रे बन्दे। ६४

जन्म सफल हो जाये

तेरो अवसर बीता जाये राम भज बांवरिया
क्यों विरथा जन्म गंवाये राम भज बांवरिया
जो दिन गया सो फिर नहीं आवे, कर विचार मन लाये।
या जग बाजी सच्च न जानों, ता में मत भरमाये।
कोई किसी का नहीं बांवरे, नाहक प्रेम लगाये।
अन्त समय कोई काम न आवे, जब यम लेहिं बुलाये।
साधु संगत मिल हरि गुण गा ले, जन्म सफल हो जाये। ६५

नारी नेह लगायो

गोविन्दा न गायो जन्म गंवाया तू ने बांवरे,
यह संसार फूल सेमर का शोभा देख लुभायो रे।
चाखन लाग्यो रूई उड़ गई हाथ कछु नहीं आयो रे॥
यौवन मोह माया में वीता बचपन खेल गंवायो रे॥
आया बुढ़ापा रोग सतावे भजन किया नहीं जायो रे॥
मात पिता की करी न सेवा नारी नेह लगायो रे।
सुन-सुन मीठी बात सुतन की मोह के जाल फंसायो रे॥
यह संसार हाट वनिये का सव कोई सौदे आयो रे।
चतुर ने माल चौगुना कीना मूर्ख माल ठगायो रे॥
कभी न आया संत सभा में कभी न हरि गुण गायो रे।
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो अन्त समय पछतायो रे॥ ६६

नन्द के किशोर

आवो री ब्रज की नारी मंगल गावो री
नन्द के दुलारे को झूलना झुलावो री
आज नन्द भवन में आनन्द छायो, तोरण बन्धावो केसर चन्दन छिड़कावो री।
सुन्दर गुलाब के हार बनावो, नन्द के किशोर को फूलन से सजावो री।
माता यशोदा वलि-बलि जाये, कँचन थील भरे रत्न लुटावो री।
शाम सुन्दर के दर्शन पा कर, जीवन अपना सफल बनावो री। ६७

चरणामृत का पान करे

ऋषि-मुनियों के सुखदाई, आज चले बन रघुराई।
गंगा जी के तट आये, केवट को झट बुलवाये।
बोले पार करो भाई।
केवट कहे नहीं पा र करूँ, तुझ पै नहीं इतबार करूँ।
मैं जानूं तेरी प्रभुताई।

लीला जाय नहीं वरणी, पत्थर गौतम नारी बनी।
काठ में है नहीं कठिनाई।
जो कुछ करना हो कर ले, पार हमें झट तू कर दे।
बोले प्रभु जी मुसकाई।
केवट चरण पखार रहे, चरणामृत पान करे।
सब परिजन में बँटवाई।
गंगा के उस पार लगे, केवट को कुछ देने लगे।
बोले ले लो उतराई।
चरणों में केवट कहता है, धोबी से धोबी न लेता है।
लेत न नाई से नाई।
दास नदी से पार करे, तू भवसागर पार करे।
मैं नहीं लूंगा इक पाई।
याद हमारी रख लेना, पार हमें भी कर देना।
विनती यही है रघुराई। ६८

वृथा जन्म गंवाते

सदा धर्म करते रहो, जब लग घट में प्राण।
धर्म शास्त्र में दस लिखे, उसके खास निशान॥
दस चिन्ह धर्म के भाई, महाराज मनु बतलाते।
प्रथम तुम धीरज को धारो, दूजे सब के वचन सहारो।
तीजे मन अपने को मारो, यह ही हैं उपदेश सुनाते॥
चौथे तज चोरी का पेशा, मिटें सकल नर तेरे क्लेशा।
रहो पांचवें शुद्ध हमेशा, सब ऋषि मुनि फरमाते।
छठे इन्द्रियें वश में करना, सप्तम चित्त विचार में धरना।
अष्टम विद्या मति में भरना, जो तुम मनुष्य हो कहलाते॥
नौंवे सत्य को धारण कीजे, दसवें क्रोध त्याग तुम दीजे।
हर दम सुमिर मुरारी लीजे, क्यों वृथा जन्म गँवाते॥ ६९

शृङ्गार वसन्ती है

स्यामा स्याम सलोनी सूरत का शृंगार बसंती है।
मोर मुकुट की लटक बसंती, चन्द्रकला की चटक बसंती।
मुख मुरली की मटक बसंती, गुंजमाल गल सोहे–
फूलन हार बसंती है।
माथे चन्दन लगा बसंती, पहन रहे पोशाक बसंती।
चले चाल अलमस्त बसंती, रुनक झुनक पग नूपुर की–
झन्कार बसंती है।
संग ग्वालन के बोल बसंती, बजें चंग ढप ढोल बसंती
बोल रहे हैं बोल बसंती, बस सखियन में राधा जी–
सरदार बसंती है। ७०

कोटि व्याधा मिटे

संकट हरेगी करेगी भली, वृषभानु लली॥
तेरे भक्तों को भारी भरोसा रहे,
जो आवे शरण वाकी वैय्यां गहे।
दुष्टों के दल में करे खलबली, वृषभानु लली॥
राधा श्री राधा श्री राधा रटे,
राधा रटे कोटि व्याधा मिटे।
प्यारी जो लागे रंगीली गली, वृषभानु लली॥
त्रिभुवन पति अपने वश में किये,
जहाँ पग धरे श्याम नैनां धरे।
छलिया ने बहु रूप धर-धर छली, वृषभानु लली॥
बरसाने वारी तू मेरी सहाय,
दीनन दयानिधि दर्श तो दिखाय।
श्री राधा तपस्या करी सो फली, वृषभानु लली॥ ७१

सार को सार

परम धन राधा नाम अधार।
जाहि स्याम मुरली में टेरत, सुमिरत बारँबार।
जंत्र-मंत्र अरु वेदतन्त्र में, यही कियौ निरधार।
श्री सुक प्रगट कियो नहिं यातें जानि सार को सार।।
कोटिन रूप धरे नंदनंदन, तऊ न पायौ पार।
व्यास—दास अब प्रगट बखानत, डारि भार में भार।। ७२

कब तक छिपे रहोगे

मरना तेरी शरण में जीना तेरी शरण में।
मिट जायेगी हमारी तृष्णा तेरी शरण में।
दर्शन की चाह लेकर कुछ श्वास ले रहे हैं,
जीवन की राह लेकर अभ्यास दे रहे हैं।
अर्पण करेंगे हम तो तन मन तेरी शरण में।। मरना..........
तुम आओ श्याम प्यारे निज रूप गोचरी में,
पलकें बिछा रहा हूँ नयनों की कोठरी में।
हम कैद हो चुके हैं मोहन तेरी शरण में।। मरना..........
ओ मोर मुकुट वाले ताला तो खोल दिल का,
कुंजी है तत्त्वमसि की वादा तो गोल दिल का।
सर्वस्व दे चुके हैं भगवन तेरी शरण में।। मरना..........
कब तक छिपे रहोगे अब काम क्या शरम का,
ब्रजराज आज आकर पट तो उघाड़ भ्रम का।
हम चोर बन चुके हैं व्यापक तेरी शरण में।। मरना..........
चौरासी की यह चादर अब टूक-टूक होगी,
सुन लेना नाथ मुझ से फिर यों न चूक होगी।
सब छिद्र पाप दिल का सीना तेरी शरण में।। मरना.......... ७३

होली अनमोली

आली चलो नन्द के धाम श्याम सँग खेलेंगी होली।
खेलेंगी होली कृष्ण संग खेलेंगी होली।
श्री वृषभानु किशोरी राधे सखियन सों बोली।
करि सोलह श्रृंगार सजा लो सुंदर निज टोली।। आली..........
नीले पीले रंग गुलाबी केशर लो घोली।
अबीर गुलाल हाथ में ले लो भरि-भरि के झोली।। आली..........
लोक लाज कुल त्याग चतुरता बन जाओ भोली।
"रामप्रपन्न" श्याम सँग खेलो होली अनमोली।। आली........... ७४

प्रीत की रीत

व्रज विहारी गिरवर धारी, आ जा रे सांवरिया।
ग्वाल बाल संग माखन मिश्री खा जा रे सांवरिया।
गोकुल की हर एक गली में, छाई है अन्धियारी।
अन्धियारी में ठोकर खायें, तेरे प्रेम पुजारी।
दुखियों पर दर्शन का पानी, पा जा रे सांवरिया।
इतने कठोर बने क्यों मोहन, देखी क्या बुराई।
आज तलक नहीं भेजी पतियां, प्रीत की रीत भुलाई।
संग राधा के गीत प्रेम के, गा जा रे सांवरिया।
कब देखेंगे नैन बांवरे, नारायण छवि प्यारी।
दर्शन बिन न कभी हटेगी, विरहन की बीमारी।
तू तो राधा के मन का है, राजा रे सांवरिया। ७५

माता श्री गंगे

मेरा कर दे बेड़ा पार माता श्री गंगे।
पतित पावनी नाम तुम्हारा, अधम जनों को तू ने तारा।
मेरी भी ले ले सार, माता श्री गंगे।

जो जग तेरी शरणीं आया, तू ने माता तार दिखाया।
तेरी अमृत जैसी धार, माता श्री गंगे।

हरिद्वार मुक्ति का द्वारा, दर्शन को आवे जग सारा।
तेरा नाम जपे संसार, माता श्री गंगे।

फल चढ़ावां ज्योति जगावां, हर-हर गंगे नाम जपावां।
आवागमन निवार, माता श्री गंगे। ७६

संकीर्त्तन

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।
राधेश्याम, सीताराम, प्रेम से भज मन दोनों नाम।
अवधबिहारी सीताराम, कुन्जविहारी राधेश्याम।
नन्ददुलारे श्री घनश्याम, दशरथ प्यारे सीताराम।
जय यदुनन्दन राधेश्याम, जय रघुनन्दन सीताराम।
कंसनिकन्दन राधेश्याम, भवभयभंजन सीताराम। १

तू बोल मेरी रसना मदन गोपाल।
केशव माधव दीनदयाल।
जय मधुसूदन जय नन्दलाल।
सकल जगत के हैं प्रतिपाल।
असुर निकन्दन जय ब्रजपाल। २

मोहन मदन मुरारी, हमारो धन गिरधारी।
रटना लगी तुम्हारी, हमारो धन गिलरधारी।

सुन्दर कुण्डल नयन विशाला,
गल सोहे बैजन्ती माला।
काधे कामर कारी।

अर्जुन का रथ हांकन हारे,
गीता के उपदेश तुम्हारे ।
चक्र सुदर्शन धारी ।

तुम बिन और कहां मैं जाऊँ,
औरन से कहते सकुचाऊँ ।
सुनो दीन दुःखहारी ।

श्याम सुन्दर क्यों सुरत विसारी,
भारत जनता बहुत दुखारी ।
सुधि लो नाथ हमारी । ३

मन राधेश्याम राधेश्याम गाये जा, तू जीवन सफल बनाये जा ।

पद पंकज की शोभा न्यारी,
जन मन रंजन कुंज विहारी ।
उसी संग प्रीत लगाये जा । मन राधेश्याम ....

कृष्ण नाम से प्रीत लगा ले,
प्रभुचरणों में शीश झुका ले ।
अपना भाग्य बनाये जा । मन राधेश्याम ....

पांच ठगों ने तुझ को घेरा,
तेरे मन में लाया डेरा ।
अपना, आप बचाये जा । मन राधेश्याम ४

छोटा सा मन्दिर बनायेंगे, हरि गुण गायेंगे ।
ज्ञान का गारा प्रेम की इंटे, चुन चुन महल बनायेंगे ।
श्रद्धा की हाथों में ले कर थाली, नैनों की जोत जगायेंगे ।
गूंथ-गूंथ फूलन की माला, अपने मोहन गल पायेंगे ।
मथुरा जी के पेड़े मंगाकर, रुचि रुचि भोग लगायेंगे । ५

जीवन के दिन चार भजो श्री कृष्ण हरे।
इस जग में कोई नहीं अपना, यह दुनियाँ है सुन्दर सपना।
कोई न लगता सार।
प्रभु नाम का पकड़ सहारा, करता वह सब का निस्तारा।
वो ही सुने पुकार।
राम कीर्तन कर लो प्यारे, जाग उठेंगे भाग तुम्हारे।
नैय्या होगी पार। ६

ओं जय जय जय जय कृष्णा, कृष्णा
प्रभु चरणन की रज मैं पाऊँ, जीवन अपना सफल बनाऊँ।
यही मन की है तृष्णा, कृष्णा।
आ जावो प्रभु शाम मुरारी, नटवर नागर गिरवर धारी।
यही मन की है तृष्णा, कृष्णा। ७

गोपाल कृष्णा बोल रसना, राधे कृष्णा बोल।
जीवन का उद्देश्य यही है, गुरुवर का उपदेश यही है।
ना लागेगा मोल। रसना ....
नन्दे की खातिर चरण दबाये, सांवल शाह बन हुण्डी चुकाये।
महिमा है बे तोल। रसना ....
जे चाहे भवसागर तरना, मिट जायेगा जीना मरना।
पाप की गठड़ी खोल। रसना ८

भज गोविन्दं, बालमुकुन्दं, परमानन्दं हरे हरे।
भज गोपालं, दीनदयालं, नयन विशालं पाप हरे॥
भज रघुनन्दन, गोपी-मनरंजन भवभयभंजन हरे हरे।
भज ले राधे, प्रेम अगाधे, कारज साधे हरे हरे। ९

मोर मुकुट पीताम्बर धारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
जय जय गोवर्धन गिरधारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।

मुरली वाले श्याम बिहारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
जय जय भक्तन के हितकारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
नरसी भक्त की हुंडी तारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
सांवल शाह बन गये मुरारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
धन्ने भक्त की बीजी क्यारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
गज की टेर सुनी गिरधारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
दर्श दिखायो मदन मुरारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी।
तुम बिन सूनी भारत सारी आवो आवो कुञ्ज बिहारी। १०

बोलो मुकुन्द माधव जय घनश्याम,
देवकी नन्दन राधे श्याम
बोलो शाम राधे। ११

राम धुनि लागी, गोपाल धुनि लागी,
अब कैसे छूटे, राम रट लागी।
ध्रुव को लागी, प्रह्लाद को लागी,
नरसी को देख लो कैसी धुनि लागी।
राधे को लागी, रुक्मिणी को लागी,
मीरा को देख लो कैसी धुनि लागी।
तुलसी को लागी, बिल्वा को लागी,
नारद को देख लो कैसी धुनि लागी। १२

राधे गोविन्द हरे।
गोविन्द ,हरे गोपाल हरे।
गोपाल हरे नन्दलाल हरे।
जय जय प्रभु दीनदयाल हरे।
जय नन्दनन्दन ब्रजपाल हरे।
राधे गोविन्द हरे। १३

तीन लोक के पति परमात्मा,
मेरी है डण्डौत बन्दना।
मेरा शुद्ध कर देवो आत्मा,
मेरी है डण्डौत बन्दना।
होवे कृपा तें मिलन महात्मा,
मेरी है डण्डौत बन्दना। १४

जय शंभु जय शंभु शंभु, जय शंभु कैलाशपति।
जय गौरी जय गौरी गौरी, जय गौरी जय पार्वती॥ १५
शंभु शंभु–गौरी गौरी

भज गोबिन्द गोबिन्द गोपाला,
भज मुरली मनोहर नन्दलाला।
मथुरा में हरि जन्म लियो है,
गोकुल झूले नन्दलाला।
गोपी के कन्हैया बलराम जी के भैय्या।
भक्तन के प्रभु रखवाला।
पूतना को जननी गति दीन्ही,
अधम उद्धारे नन्दलाला।
जमुना के तीर प्रभु धेनु चरावें,
मुरली बजावें नन्दलाला। १६

राधे श्याम राधे श्याम श्याम श्याम राधे राधे।
राधे कृष्णा राधे कृष्णा कृष्णा कृष्णा राधे राधे॥ १७

भज देवकी नन्दन गिरधारी,
कृष्ण कन्हैया बनवारी।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे,
कुंडलों की है छबि न्यारी। भज०

गोकुल ढूँडी मथुरा ढूँडी,
ढूँड फिरी मैं बन सारी। भज०
वृन्दावन की कुँज गलिन में,
रास रचावें बनवारी। भज०
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर,
चरण कमल पै बलिहारी। भज० १८

मुरली मनोहर सुन्दर श्याम भज मन राधे कृष्णा।
भज मन राधे कृष्णा, भज मन गोपी कृष्णा। १९

जय हो मेरा गिरधारी।
जीव जन्तु चींटी ले हस्ती बाल वृद्ध नर नारी।
भोजन दान करत है सब को जो लग श्रेष्ठ सवारी॥
जय हो मेरा गिरधारी।
चातुर मूढ़ गुणी अज्ञानी चोर चार बटमारी।
गुण अवगुण को नहीं विचारे दान को बांह पसारी॥
जय हो मेरा गिरधारी।
दांत नहीं तब दूध उतारे यूँ पाले महतारी।
दांत दिये वैसा ही भोजन जिस को जो आहारी॥
जय हो मेरा गिरधारी।
सो करुणामय परम दयाला सकल जगत हितकारी।
धन्य धन्य प्रभु तेरी लीला महिमा अपरम्पारी॥
जय हो मेरा गिरधारी।
शबरी, मीरां, सदन कसाई, नारी अहिल्या तारी।
लाखों पापी पार उतारे कहाँ छिपे मेरी वारी॥

आरती समुच्चय

उत्सव प्रार्थना

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥ १ ॥

गोपालबालं भुवनैकपालं, संसारमायामतिमोहजालम्।
यशोविशालं शिशुपालकालं, बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ २ ॥

करारविन्देन पदारविन्दं, मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं, बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ ३ ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ ४ ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ॥
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।
ॐ शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः ॥

१

आरती कुञ्जबिहारी

आरती कुञ्जबिहारी की, कि नटवर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजन्ती माला, बजावे मुरली मधुर बाला।
नन्द के नन्द यशोदा नन्द, शाम बांके गिरधारी की ॥
गगन सम अंग कान्ति काली, कि राधा रानी चमक रही आली।
कस्तूरी तिलक, चांद सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की।
गगन से सुमन बहुत बरसें, देवता दर्शन को तरसें।
बजे मृदंग ग्वालों के संग, लाज रख गोप कुमारी की ॥
चहुँ दिशि गोप ग्वाल धेनू, बाज रही यमुना तट वेणू।
हँसत मुख मन्द, कटे भव फन्द, प्रीत है सब ब्रज नारी की ॥

जहाँ से प्रगटी भव भंगा, कलि-मलहरनी श्री गंगा।
वसे शिव शीश, जटा के वीच राधिका शाम मुरारी की ।।२

आरती अवधबिहारी

आरती अवध विहारी की, लखन सिय जनक दुलारी की।
शीश पर क्रीट मुकुट सोहे, चन्द्रिका की छवि मन मोहे।
लखन सेवा वलिहारी की।। आरती० ।।
कपोलन पै अलकें झलकें, हसन में विजली सी चमके।
रेख कजरारे नैनन की ।। आरती० ।।
गले में कौस्तुभ मणिमाला, रूप लखि मोहे सुरपाला।
सुमन झर शोभा न्यारी की।। आरती० ।।
धन्य सरजू निर्मल नीरा, भरत रिपु दमन महावीरा।
चरण सेवा धनुधारी की।। आरती० ।।
जिये जुग श्यामल जोड़ी, भजो मन सब माया तोड़ी।
दरश हित युगल बिहारी की। आरती० ।।३

जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे।। जय० ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का। जय० ।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम विन और न दूजा, आस करूं किसकी।। जय० ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। जय० ।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ जय० ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥ जय० ॥

दीनबन्धु दु:खहर्ता, ठाकुर तुम मेरे।
अपने हाथ उठावो, द्वार पड़ा तेरे। जय० ॥

विषय विकार मिटावो, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ावो, सन्तन पद सेवा॥ जय० ॥

४

गीता–आरती

ॐ जय भगवद् गीते, माता जय भगवद् गीते।
हरि हिय कमल विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते॥
॥ ॐ जय० ॥

कर्म सुमर्म प्रकाशिनि, कामासक्ति हरा।
तत्त्व ज्ञान विकासिनि, विद्या ब्रह्म परा॥
॥ ॐ जय० ॥

निश्चल भक्ति विधायिनि, निर्मल मल हारी।
शरण रहस्य प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी॥
॥ ॐ जय० ॥

राग द्वेष विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव भय हारिणि तारिणि, परमानन्द प्रदा॥
॥ ॐ जय० ॥

आसुर भाव विनाशिनि, नाशिनि तम रजनि।
दैवी सद्‌गुण दायिनि हरि रसिका सजनी॥
॥ ॐ जय० ॥

समता त्याग सिखावनि, हरि मुख की बानी।
सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियों की रानी ॥
॥ ॐ जय० ॥

दया सुधा बरसावनी, मातु कृपा कीजै।
हरि-पद-प्रेम दान कर, अपनो कर लीजै ॥
॥ ॐ जय० ॥ ५

आरती श्री सत्यनारायण

जय लक्ष्मीरमणा, श्री जय लक्ष्मीरमणा।
सत्य नारायण स्वामी, जन पातक हरणा ॥

रत्न-जड़ित-सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निरंजन, घंण्टा ध्वनि बाजै ॥ जय० ॥

प्रगट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो ॥ जय० ॥

दुर्बल भील कठोरा, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ इक राजा, जिनकी विपति हरी ॥ जय० ॥

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तजि दीन्ही।
सो फल पायो प्रभु, जी, फिर स्तुति कीन्ही ॥ जय० ॥

भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीन्ही, जिनको काज सर्‌यो ॥ जय० ॥

ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मन वांछित फल दीनो, दीन दयालु हरी ॥ जय० ॥

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत देवा ॥ जय० ॥

सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावे।
तन मन सुख सम्पति, मन वांछित फल पावे॥ जय० ॥ ६

आरती-युगलकिशोर

आरती युगल किशोर की कीजे, तन मन धन सब अर्पण कीजे।

रवि शशि कोटि वदन की शोभा, ताहि निरख मेरो मन लोभा।
गोर श्याम मुख निरखन कीजे, हरि स्वरूप नैंन भरि पीजे॥
आरती युगल किशोर०

कंचन थार कपूर की बाती, जगमग ज्योति जले दिनराती।
फूलन की सेज फूलन गल माला, रत्न सिंहासन वैठे नन्दलाला।
आरती युगल किशोर०

मोर मुकुट कर मुरली सोहे, नटवर भेष देख मन मोहे।
ओढ़े नील पीत पट साड़ी, कुंज बिहारिन कुंज बिहारी॥
आरती युगल किशोर०

श्री पुरुषोत्तम गिरवर धारी, आरती करत सकल ब्रजनारी।
नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी, "परमानन्द" प्रभु अविचल जोड़ी॥
आरती युगल किशोर० ७

श्री गुरुदेव-स्तोत्रम्

श्री गुरुदेवं नौमि तमेवं गतमदमानं रहितविकारम्।
नित्यं ज्ञेयं नित्यं ध्येयं नित्यं गेयं ज्ञानाधारम्॥१॥
श्री गुरुदेवं.... ....

ब्रह्मनिधानं शीलविधानं धृतगुणमानं परमोदारम्।
निग्रहनिष्ठं बुद्धिवरिष्ठं भावजविष्ठं सहितविचारम्॥२॥
श्री गुरुदेवं ....

अशरणशरणं संशयहरणं लोकाभरणं जगदाधारम्।
मङ्गलकरणं मङ्गलचरणं मङ्गलभरणं मङ्गलसारम्॥३॥
श्री गुरुदेवं ....

अघदलकदनं कुसुमितवदनं शोभासदनं निरहङ्कारम्।
ज्ञानासक्तं ध्यानारक्तं सर्वविरक्तं शुद्धाचारम्॥४॥
श्री गुरुदेवं ....

अतिमृदुहासं वाणिविलासं दिनमणिभासं बहुहितकारम्।
विनयावनतो परमविनीतो नौमि सदाहं गुरुपदचारम्॥५॥
श्री गुरुदेवं ....

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः,
पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे,
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥

अपार-संसार-समुद्रमध्ये,
निमज्जतो मे शरणं किमस्ति?
गुरो! कृपालो! कृपया वदैतत्,
विश्वेश-पादाम्बुजदीर्घनौका॥

महामन्त्र

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

शयन प्रार्थना

सो जा, श्याम मुरारी! सोजा।
सो जा, मैं बलिहारी, सो जा॥
चन्दा की उजियारी सो जा।
शीतल मन्द बयारी, सो जा॥

सो जा, मीठी लोरी गाएँ।
धीरे-धीरे बिजन डुलाएँ।
उड़कर प्रेम नगर को जाएँ।
प्रेम नगर की सखियाँ आएँ।
आकर झूला तुम्हें झुलाएँ।
मीठी-मीठी नींद सुलाएँ।
सो जा हे बनवारी! सो जा॥
सो जा श्याम मुरारी! सो जा॥

शयन आरती

(राग : यमन कल्याण)

जय गिरिधारी जय गोपाल। नन्द-यशोदा के प्रिय लाल।
करुणा-वरुणालय सुख-सागर,
ब्रज-नन्दन अगणित गुण-आगर,
विश्व-उजागर नव नट-नागर,
शरणागत जन-मन-प्रतिपाल॥
जय गिरिधारी जय गोपाल। नन्द-यशोदा के प्रिय लाल॥

प्रेम–तरंग

भव-भय-भंजन जन-मन-रंजन,
भक्त-निकर-चख-सुखकर, अंजन,
निज मन-मानस, कल्मष-गंजन,
सन्त-सुरभि–सुर–उर–जयमाल ।।
जय गिरिधारी जय गोपाल। नन्द-यशोदा के प्रिय लाल ।।

अमल कमल-सम विमल दृगंचल,
यशन-अयन कर निज नयनांचल,
पलंग सनाथ करो प्रभु चंचल,
कुटिल अलकयुत छविधर भाल ।।
जय गिरिधारी जय गोपाल। नन्द-यशोदा के प्रिय लाल ।।

सामूहिक प्रार्थना

हे पूर्ण परमात्मा हम न रहें पापात्मा।
विश्व बने धर्मात्मा हम सब हैं तेरी आत्मा ।।

मुद्रक : पी. एच्. रामन, एसोसिएटेड एडवर्टाइजर्स एण्ड प्रिंटर्स,
५०५, आर्थर रोड़, तारदेव, बम्बई–७
प्रकाशक : हरिभजनदास कोठारी, श्री साधुबेला उदासीन आश्रम,
महालक्ष्मी, बम्बई–१६

BRIEF HISTORY OF SHRI SADHUBELLA

142 years ago in the year 1818 A.D. the founder of the Ashram Yogiraj Sadguru Bankhandi Maharaj Udasin came to this city and laid the foundation of the now beautifully constructed building of the Shri Sadhubella Udasin Ashram, near Mahalaxmi, Bombay 26. From here he went to Sukkur (Sind) and in the midst of Sindhu river, between Sukkur and Rohri on small island, steadily built an Ashram known throughout as Shri Sadhubella Tirth.

During the long span of 142 years there have been so far nine Mahants. The last Mahant, His Holiness Shri 108 Swami Harinamdasji brought about many improvements. Celebrities like Lokmanya Tilak, Mahatma Gandhi, Pandit Madan Mohan Malaviya, President Rajendra Prasad and Pandit Jawaharlal Nehru paid visit and homage whenever they came to Sind.

After Partition, Hindus were obliged to leave their Homeland. The present Mahant, His Holiness Shri 108 Swami Ganeshdas Udasin nineth in succession, has built a beautiful Ashram at the old laid foundation of the Ashram at Mahalaxmi, where he has provided all modern amenities and conveniences for the general public. The Ashram has proved a boon for the Sadhus. Daily *Katha* and *Kirtan* attract large number of people. A charitable dispensary has been opened. Down below is a Marriage and the *Pangat* Hall. Water Cooler provides cold water to the passers by. A religious and Social Monthly '*Vasanti*' is published from Varanasi.

Many mystic tales are heard about his century and a half old Ashram. It is said that the entire plot of many thousand yards was given as a gift to Shri Yogiraj by one Parsi gentleman in token of his son's cure from illness. The *Dhooni* (Burning embers) ever since then has been burning at the same place in the basement of the Ashram all the 24 hours and it is said about it that any person who visits the *Dhooni* daily and has faith, has all his wishes fulfilled. It is also said that *Devi Anna Purna* (Goddess of Food) was so pleased with the Yogiraj that she gave him a *Karmandal* avowing that there would be no shortage of food in the Sadhubella at any time. The same *Karmandal* is still in possession of Shri Swamiji which is shown to the General Public on very special auspicious days.

चरण कमल बन्दौं हरि राई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, अंधे को सब कछु दरसाई ।।१।।
बहिरो सुने गुंग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई ।
“सूरदास” स्वामी करुनामय, बारबार बन्दौं तिहिं पाई ।।२।।

—राधेश्याम का दास गागन, दयाराम सानी